A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 296 Subject PHILOSOPHY

Name of MSS ભાષા ભૂષણ

Author हरि ચરણદાસ

Period ______ Folios 44A

Script DEVANAGIRI Source Prithi Pal Singh

Missing Folios 40A - 42

1A

296

...। जाको उपमा दी...

...दर्दै उपमा वा...के जौन। ३...

...लमोपर...पमान २ ३ प

...नि स...यमे र

...नत उप...

...विरमा...

नह संवत

२२

उपमान ... मस्रो प्राप्त रसाय
आकृत ... वर्न गुन उपमा कहि तिन नाय ॥३॥

A. No. 296.

॥ श्रीगुरुचरनकमलेभ्यो नमः ॥ अथ भाषाभूषन की टीका चमतकार चंद्रिका कित कवि हरिचरनदास लिष्यते ॥ दोहरा ॥ तुलसी सोभति चरन मैं गल तुलसी दल माल ॥ विहरति राधा संग मैं नमो नागर नंदलाल ॥१॥ ललित माल ललिता रचै श्रीराधा के हेत ॥ महल टहल विंदा करति मधुमंगल सुसमेत ॥२॥ सवैया ॥ मैं जुलकें जलि ... मैं छवि विंजुलकुंजन मैं विकसी है ॥ षंजन के मद भंजन लोचन अंग अनंग कला सरसी है ॥ आनंदकंद है नंदको नंदन चंदनवंदन वंदी लसी है ॥ मंदमुकुंद हहै अरविंद मैं कुं... कली दरसी है ॥३॥ अथ विंदावन वरनन ॥ मोहन लीला को सवैया ॥ जित कोकिल के गान कुंज मैं मन मधुवित रंग ... हायो ॥ चाह लता लपटी तरु सों सुकि ...पिय कंठि लगायो ॥ धार लसै जमुना जल की चहु और विचारहु है चित आयो ॥ नील मको... रमनों करनार लै श्रीवन को पहिरायो ॥४॥ दोहा ॥ भाषाभूषन ग्रंथ को ... नवंद न ...हरि कवि करत है उदाहरन रैवेस ... नेहांलव ... लोक तें भाषाभू... ...लहरन ...वितहि करत सुहरि कवि सु ...॥५॥ अथ ... उपमा ... ...पूरन उपमा हीन तहि ल ... उपमा विचारि ... उपमान ...

उपमान उपमेय लछन ॥ जाको उपादान जिके सो कहिये उपमान ॥ जाको उपमा दीजै सो उपमेय बखान ॥ वाचक धर्म एक न लछन ॥ सो से सो सम अरु आदि दै उपमावाचक जान ॥ उपमान रु उपमेय धर्म वाचक जान

IA

पमा ज्ञानिये जहां होन हों हि उपमान आदि मैं ये क दोइ तीन नही हों हि सो लुप्तोपमा होति
है १ अथ पूरनोपमा मूल अंबुज से लोयन अमल मधुर सुधा सी बानि ससि सो उज्ज
ल त्रिय बदन पल्लव से मृदु पानि १ टीका अंबुज उपमान सो वाचक लोयन उपमेय
अमल साधारन धरम जो उपमान उपमेय मैं रहै सो साधारन धरम कहावै है अमल
अंबुज औ अमल लोइन भी ऐसे ही सुधा उपमान वानी उपमेय सी वाचक मधुर साधारन
धरम अथ लुप्तोपमा वरनन काव्य छंद वाचक लुपता ये क धरम लुपता पुन जान दु
क. धरम वाचक लुपत वाच उपमेय पच्छ जान दु उपमान हि पुन लुपत हु वाच उपमानन ता बहु लु
पो धरम उपमान एक उपमेय हि भाषहु ऐक उपमेय हि भाषो याको अर्थ वाचक साधा
रन धरम उपमान इन तीन हू को जहां लोप होइ एक उपमेय हि रहै जथा दोहा कमल
वदन संदर लसै सखी कमल से पाइ धनु भ्रकुटी तिय को दिपै कंचन वेलि सुहाइ १ अर्थ
कमल वदन कमल सो वदन सो वाचक ताकौ इहां नही देखिये है अरु थकरत मैं जो सोजा
न है सुंदर साधारन धरम है यहि वाचक लुप्ता: कमल से अरुन पाइ है अरुन साधारन

२ २

धरमकोइहांलोपहै साधारनधरमलुप्ता धनुष्यसीरेहीतियकीभ्रकुटीदेषीतीहै सो
वाचकटेहतासाधारनधरमताकोलोपहै वाचकधरमलुप्ता कंचनवेलिसीनाय
कासोभतिहै सोवाचकनायकाउपमेयसोटोनोनहीहैइहां उपमेयवाचकलुप्ता
मल: मगाक्षेसुंदरनैनहैं तारमरदकमनीय केहरिसीकटिहैललनगजगामिनी
नमनीय ११ भीवाभेनचुमोभेदउपमेयलुपताभीकविकहतनैहै यथा विहारी की
यविकुरनकोउसहउष हरषजानप्योसार इरजोधनलाटेषियतिनजतिमानर
हिवार १२ टीका इरजोधनउपमानलोंवाचकमानकोरिवोसाधारनधरमउपमेय

नाइ

कासोरहोनहीहै मल पिककंठीगजगौनिके सुंदरिहैतिनानैन गैसेउपमाजानि
यैकहतसुकविरसभैन १३ पिककंठीपिकसोकंठसोकंठकहियेस्वरकोसोम
नोहरहैनाकोपिकजोहैसोकंठकोउपमाननही क्योपिककोजोकंठहैसोकंठकोउ
पमानुहैताकोलोपहै उपमावाचीसोशहनहीहै साधारनधर्ममनोहरतहीहै नाय
काउपमेयनही इहांकेवलकंठउपमेयहै उपमानवाचकधर्मलुप्ताजानिये गजगौ

२

नाइकानि

2A

नि गजगौंनिसोगौंनमंदहैजाको गजजोहैसोगौंनकोउपमाननहीं गजकोजोगौंनहै
सोगौंनकोउपमानहै ताकोइहांलोपहै उपमावाचीसोपाहूननहीहै मंदिततादिसाधारनध
र्मभीनहीहै नायकाविशेष्यहै नायकाउपमेयनहीं इहांकेवलनायकाकोगमनउपमेयहै
उपमानवाचकधर्मलुप्ता सुंदरहै म्रिगनैननम्रिगकेनैनसे याकेनैनसुंदरहैं म्रिगउप
माननहीं म्रिगकेनैनउपमानहैं सोइहांनहीहै म्रिगहीकोकोईउपमाननेत्रनकेकहत
है तहांयाबिहारीकेदोहासोंविरोधहोइहरिनीकेनैनानतेंहरिनीकेयेनैंन औवाचकनहीं
है सुंदरधर्महै वाचकलुप्तायहै औरतोहै जहांसबदसुनतिहीसमताभासे
सोश्रौतीउपमाजानिये अथआर्थीउपमा दोहा मूल जोअर्थहिसोंहोतहै आर्थीउपमा
सैन चंद्रसत्रुसमुझामतवसुधाबंधुहैबैन ॥१४॥ अर्थ बरोबरकोसत्रुहोतोहै चंद्रमाकोस
त्रुसमुझेहैबरोबरिकोहै यहअर्थसोंनिकरैहै औसेवचनसुधाकोबंधुबंधुबरोबरकोहोतहै
सुधासोहैयहअर्थतेंजांनियें यथा बिहारी नीचहियेहुलसेरहैंगहैंगेंदकोपोत ज्योंज्योंमाथे
मारियेत्योंत्योंऊंचेहोत ॥१५॥ टीका गेंदकेपोतगेंदकीतरहि सोटसमानहै इअर्थमेंगेंदसेजानियेजो

रजीतेसरनमै
वकेमैसेटवमै
॥६॥

मित्रचोरवादी
...
...
...

यमलो नामेना एकउपमानि होत है ता हायल
ताते उपमान बहुत होय सो मालोपमा ॥ ३

नीचहैं नगनमैं औरौ अहअरथीकेभेद और ग्रंथनिमैं बहुत हैं उज्वलियानंद ग्रंथमैं तोघे।
दोनो भेद हैं अथ मालोपमा मूल इककी उपमा बहुत जहिं मालोपमा है जैसे सफरी ख
3 ञ्जनकंज से हैं प्यारीके नैन १७ उज्वलियानंद के मन मे मालोपमा न्ह री नहीं अथ रसनो
पमा रसनोपम नहिं वरनिहिं होत जात उपमान उलसी मति सो मन नमन नही सो गु मति
रहान १८ टीका उल उपमेय मति उपमान इत्यादि ऐसे जानिये अथ अनन्वयअलंकार
मूल उपमेही उपमान जब कहत अनन्वय ताहि तेरे मुखसो जगत मैं तो रेई मुख आहि
१९ टीका ईहां मुखही उपमेय है अह मुखही उपमान जानिये जैसे विंद्रावनके समान
ऐसे नहीं है विंद्रावनही है जमुनाजी के समान जमुनाजी है बंसीवट के समान बंसीवट इत्यादिक
ऐसे जानिये अथ पर्यायोपमा उपमा लागे परसपर सो उपमानुपमेय खंजन है न
नैन से नैन खंजन से य २० टीका खंजन की उपमा दृगनको दई दृगनि की उपमा
खंजनको दई मुख चंद्रमा सो है चंद्रमा मुखसो है ऐसे पर्यायोपमा जानिये भावमैं उप
मान उपमेय भी कहत हैं अथ प्रतीप मूल प्रतीपको अर्थ उलटा सो प्रतीप उप ३



3A

मेयकौंजबकीजेउपमानतैंलोचनमेंअंबुजबनेमुषसोचंदबषान १९ टीका अंबुजउप
मानयोसोउपमेयकीयो लोयनउपमेयुषतेउपमानकीयेयाहीतेंप्रतीप॥ भयो नमसो
कोमदहैनोहीसोअपसराहैहेसंदरि इत्यादिजहांदेषियेतहांप्रतीपहोरहैप्रथम मूल दो
हा उपमेकोउपमानतैंआदरजबैनहोइ गरबकरतमुषकोकहाचंदहिनीकैजोइ २०।
नाहकतनिजरूपकोकैंतियकरतिदिमाग देषुहद्दुतिकबिउरबसीनासीहैबडभाग २१
उपमेयमुषकोनायकाकोरूपताकोअनादरभयो उपमानजोहैचंद्रमाओउरबसीको
रूपताकरिभयो पुनः आननकेसम्मुखनीकैगरबकरैमतबाल देषेअसजगतमेसर
सिजबालमनाल २२ टीका इहांयथासंख्यअलंकारसोचमतकारनहीहै प्रतीपसोहै
अहदुतीय मूल अनआदरउपमेयतेजबपावैउपमान नीछननैनकटाछतेंमदकाम
केबान २३ टीका नैनकटाछउपमेयतासोंउपमानकामकेबानतिनकोअनादरभयो।
यथाअलंकाररतनाकरे पाहनजितिजियगरबपरहौहीकठिनअपार दुरजनकेचितदे
षियेतासोंलाषहजार २४ टीका पाषानकीकठोरताउपमान तातेंदुरजनकेचितउपमे

४

यत्नो ऐतिनौं नैयायानको अनादर भयो यह त्रितीय प्रतीप जानिये मूल उपमेय को उप
मान न व्है सम तालायक ताहि अति उत्तम दृग मीन से कहें कौन विधि जांहि २५ टीका
औरनि के नैननि कौं उपमा मीन की कवि देत हैं अति उत्तम नैन हैं ताकौं मीन सम कैसे क
हिये इहां मीन नैन की समतालायक नहीं है यह चौथो प्रतीप जानिये मूल व्यर्थ
होइ उपमान जब वरनतीय लखि सार रन आगे भ्रिग कछु न ये पंच प्रतीप प्रकार २६
यह पंचम प्रतीप: अथ रूपक ॥ रूपक दोइ भांति कौ मिलित रूप अभेद अधिक न्यून
सम दुहूंनि के तीन तीन ये भेद २७ टीका उपमेय कौं अरु उपमान कौं दुहूनि कौं एकु करि
वरनन करै जहां सो रूपक जानिये मूल उपमान रु उपमेय में भेद पै न लखाइ तासौं
रूपक कहत हैं सकल सुकवि समुदाइ २८ टीका सो रूपक दुइ भांति कौ है एक तद्रू
प है दूजौ अभेद कहीये तद्रूपता निनाहि कौ है येक अधिक तद्रूप दूसरो न्यून
तद्रूप तीसरो सम तद्रूपक हीये उपमेय कौं प्रसिध उपमान तैं ज्यादा '' हो उपमान
करि कहै सो तद्रूप ताको रूप लीयो प्रसिध उपमान सों भेद न हीं राखनो उपमेय को

४

सोऽअभेदहै येकअधिकअभेदरूसरोन्यूनअभेदतीसरोसमअभेदकहीये षटभेदरूपक
केजांनिये अथअधिकनटरूप मुषससिवाससितेंअधिकउदितज्योतिदिनराति साग
रतेंउपजीनयहिकमलाअपरसुहाति २९ टीका मुषकोंससिकह्यो येकससिजुदो
रांषोयातेंनटरूपभयो वाकीज्योतिरातिहीमैहोतिहै याकीज्योतिदिनरातिमैहै य
हिअधिकाईमुषससिकीभई उपमेयनायकाताकोप्रसिधिउपमानलछमी सोन्य
हीहीलछमीठहिराई यहिसागरतेंउपजीनही इतिनीउपमेयमैन्यूनताजानिये मू
ल नैनकमलएअैनहैंअौरकमलकिहिकाम इहांसमनटरूप नैनकोंकमलकह्यो
अौरकमलजुरांराषोसोनटरूपकहीये अथअभेदरूपक गमनकरतितीकीलगैक
नकलतायहिगाम ३० टीका यहगामकनकलताहै कनकलताजुरीराषीनही ग
मनकरैहै यहीअधिकताआई अथन्यूनअभेद अधरओठविद्रुमसषीनहिसमंदउत
पन्न टीका समंदतेनहीउपजेयहविद्रुम तातेउपमेयमैन्यूनताआई अौरयैसैहीजानि
ये अथसमअभेद मूल नवमुषपंकजविमलाअतिसरसहुवासप्रसंन ३१ टीका ।

सरसाईसुवासताअसेननताम्रषमैंअरुपंकजमैसमानहै सोयातैंसमअभेदजानियै ।
अथसाधवरूपक यथाविहारी डारेठोड़ीगाड़गहि नैनबटोहीमारि चिबुककैचौंधिमै
रूपठगहाँसीफाँसीडारि ३२ टीका भाषामैंअभेदरूपकबहुतआवैहै तदरूपकथो
रोआवैहै अथहीनोकतिनदरूप यथा मतिराम दोहा विमलिकेमंदिरनितजिकर
नआवसवठौरि भावसिंघभूपालकोतेजतरनयहऔर ३३ टीका यहितरनऔरु
है तेजतरनऔरहै योतेतदरूपजानियै यहविमलिकेघरमैंआवतनहीकैरैहै तातें।
हीयहिहीनोकतिनदरूपभयो अथपरिनाम मूल दोहरा करैक्रियाउपमानह्वैवर
ननीयपरिनाम लोचनकंजविसालतैंदेषतदेषोबाम ३४ टीका उपमानजोहैसोव
रननीयकहीयेउपमेयहोयकौंक्रियकरै कहांउपमेयसोंमिलिकेक्रियाकरै कंजजो
हैसोउपमाननेत्रउपमेय सोकंजजोहैसोविसाललोचनहोइकैंदरसनरूपक्रियाकौं
करैहै कंजकौंदरसनक्रियानहीसंभवै तातेनेत्रसोंएकरूपताकरिदेषैहै तातेपरिना
मभयोरूपकमैक्रियाकरिवोनही यामैक्रियाकरिवोहैपरिनामऔरूपकमेयहीभे

5A

द जानियै यथा विहारी जेतनवहोतिदिषादिषीभईअसीइकिअंक दरौनिरीछीरीठिअव
ह्वैवीछीकोडंक ३५ टीका वीछीकोडंकसोउपमानसोईद्रिष्टिउपमेयहोइकेदागैहै अ
थउल्लेष मूल सोउल्लेषजोएककोंवहुसमजैंवहुरीति अर्थिनसुरतरुतियमदनअरि
कौंकालप्रतीति ३६ पुन वहुविधिवरनैएककोंवहुगुनसोउल्लेष तूरनिअरजुननैंजुअर
विंसुरगुरवचनविसेष ३७ टीका पहिलेमैंतेएकश्रीकृसनकोंअनेकोंतिअनेकरूपजा
ने दूसरेमैंएकराजाकौंअनेकतरहिंवरननकीयो तातेउलेषकहीये अथसमरनभ्रां
तसंदेहअलंकार दोहा मूल सुमिरनभ्रमसंदेहएलछननामप्रकास सुधिआवततवव
दनकीदेषैंसुधानिवास ३८ टीका विरहीकीउकति सुधानिवासचंद्रमादेषैवानायका
कोवदनयादिआवैहै सुमरनालंकारऐसेजानियै अथभ्रांति मूल दोहा वदनसु
धानिधिजानिकैनवसंगिफिरतचकोर टीका वदनकोंसुधानिधिजानिकैचकोरसाथि
भये वदनमैचंद्रमाकीभ्रांतिभईचकोरनकैं यातेभ्रातालंकारऐसेजानियै अथसंदेह
मूल वदनकिधौंयहसीतकरकिधौंकमलभयेभोर ३९ टीका वदनहैकिचंद्रमाहैकिक

९

मलहैयहसंदेहजानिये समरनयथाविहारी दोहा छिनछिनमेघटकतहृदियघरीभी
रसैजात कहिन्नचलीअनहीचितैओठनहीसैवात ७१ अमरयथाविहारी रहीदहैडीछिन
गथरीभरीमरुलियावारि फेरनिकरउलटीरईनईविलोकनिहारि ७२ संदेहयथा म
तिराम वरनिपरेनहिअहलरंगअमलअधरदलमाहि कैधौंफूलीदुपहरीकैधौंफू
लीमाहि ७२ अथसुधापन्हुति परमहुरैआरोपतैसुधापन्हुतिजानि उरपैनाहिउरो
जए कनकलताफलमानि ७२ टीका वरननीयवस्तुकोपरमछपावैवाकेसमानओ
रधरमकौंराखै तहांसुधापन्हुतिहोतिहै उरोजनकोउरोजपनोछपाइकैकनकलताफ
लपनोराख्यो वरननीयकहीयैवरनकहीए अथवाप्रकृतिकहीए औविषयकहीए
एचारिनामउपमेयकेहीजानिये यथाविहारी वेईगडिगाडैंपरीउपटयोहारहिये वैन
आन्योमोरिमतंगमनुमारिगुलेलनिमैन ७४ टीका हारकोउपटिवोछपायो मैन
गुलेलनिकोधरमराख्योतातेसुधापन्हुतिभयो अथहेत्वपन्हुति मूल वसतुदु
रावैजुकतिसौंहेत्वपन्हुतिहोइ तीछनचंदनरैनिरविवडवानलहीजोर ७५ टीका

6

९

6A

न्हकनिकहीयेहेत नीछ्नदेतनिसाविषैसूरजनहीयहहेत इहांविरहनीनायकानेचंद्र
माकोंछपाइकैंवडवानलठहिरायो असमानरूपसंम्रुद्रमै चंद्रमाकोंछिपायो अथपर्य
स्तापन्हुति पर्यस्तजगुनऔरकेऔरविषैआरोप होइसुधाधरनाहियेहिवदनसुधाप
रजोप ४६ टीका कोईवसंतकोधरनछपावेंवरननीयवसंतमैठहिराइवेकेलियें नहांप
र्यस्तापन्हुतिजानियै सुधाधरमैसुधाधरपनोछपायो वदनमैठहिरायो जैसेयहकल
पतरुकाहेकोकलपतरुभूमिपालहै पर्यस्तापन्हुतिमैन्हकतिसहितकोईवसंतकोध
रमछपायऔरवसंतमैठहिरावैतोहेतपर्यस्तापन्हुतिजानियै पुनः हेलाहलविषहैन
हीविषहैरमाविहारि विषभषिसिवजागेमहै परसैरमामुरारि ४६ विषकोगुनमोहवान
गतिसोंरमाविषैठहिरायो जाकेपरसेसोमुरारिमोहितहोतहै अथभ्रांतापन्हुति भ्रांति
अपन्हुतिवचनसोंभ्रमनवपतिकोजाइ तापकंपहैज्वरनहीनासषिमदनसताइ ४७ ।
टीका सषीज्वरकोभ्रांतिकरिनायकासोंपूछ्यो नायकाकेवचनसोंसषीकीभ्रांतिगई य
थाविहारी केसरिकेसरिकुसमकेरहेअंगिलपटाइ लगेजानिनपअनषलीकतवालति

अनषाइ ४८ टीका नवछ्तकोभ्रमसषीकेवचनसौंकुद्यो अथछेकापन्हुति मूल
छेकापन्हुतिजुकतिकरि परसौंबातदुराइ करतअधरछ्तपियनहीसषीसौंतरितवा
इ ४९ नायकाकौडकतिलमअधरछ्तनकरतहो घरकेवाहरिसषीपूछेहै तेरोपीय
हैकहा नायकावचनहैतपिसौंतरिलकीयौंनअधरछ्तकरैहै इहांचतुराईसौंछ
पायौनायक यथाविहारी रहीहकीकैहूं सुचलिआधिकरातिपधारि हरतितापस
भयौसबकौउरिलगियारिबयारि ५० टीका नायककहतहैनायकासों तुमपकौह
रतिहैउरिसौंलागिके बाहरिवहुरैं सषीमंदिरतेंनायककौपूछेहै तुमारीकौयारि
है नायककहाबयारहै अथकैतवापन्हुति कैतवपन्हुतिएककोमिसकरिवरननआन
तीछनतीयकटाछमिसिबरषतमनमथबान ५१ टीका कैतवनामकपटकोहै कै
तवकपटव्याजछलमिसइत्यादिकपदनसौंजहांसाचछपावनोहोइ तहांकैतवापन्हु
तिजानिये इहकटछनहीहैकटाछकेछलकरिकामवानवरषतहै कटाछकौंछपायो
पुनः उदेउलूकसुरागनमैमित्रतेजनलषाइ पाउषसौंअलिकेसुमिसिलियकमलति

7A

विषवारु ५२ टीका मित्रमित्रकानामम्ग्रोरूरजकौंभीमित्रकविकहतहैं रातिमैभवरक मलनिमैरहतहैं ताकेमित्रकमलतिनैविषवायो मित्रस्रजग्रसतिभयो जातेकैकं जनिभवरविषमिसिवापहैं पुनः तेमुषरचिमैसखिग्निधारयोविरंचविचारिरेष। कादिपरवेषमिसिदियोछेकनिरधारि ५३ टीका सषीनायकासोंकहैहै तेमुषरचिकै मैससिग्निधारयो ऐसेब्रह्माजीविचारिकेपरवेषमिसिरेषकाढिकेचंद्रमाकोछेको। ग्रथउतप्रेक्षाचटमकारकी उतप्रेक्षासंभावनावसतहेतफललेषि वसतहेविधिउक तासपदत्रनुकतासपदपेषि ५४ हेतस्रफलसिधासपदग्रसिधासपदमानि वाच कमहांजकहतहैंग्रोतप्रेक्षाजानि ५५ टीका संभावनाकाकहियेडौलिकरनोसा उतप्रेक्षातीनिभांतिकीहै एकवसतउतप्रेक्षाहूसरीहेतउतप्रेक्षातीसरीफलउत प्रेक्षावसतउतप्रेक्षादोभांतिकीएकउकतासपदा हूसरीग्रनुक्तासपदा जाकीसंभा वनाकीजैसोसंभावमानजानिनोहिविषेसंभावनाकीजैसोग्रासपदकहीए ग्रथवा संभावनाकोविषयकहीए संभाव्यमानजोहैसंभावनाकीरठोरदोउरहै सोउकता

नि

सपदावसतु उतप्रेक्षा जांए जहां संभाव्यमान रहै संभावना को विषय नारहै जहां
क्रिया गुन मानो के धौं निश्चै लौ इत्यादिक वाचक आवै सो अनुक्तास्पदावसतु
उतप्रेक्षा जानियै उक्तास्पदावसतु उतप्रेक्षा उदाहरन दोहा चकवनिकी विरहागि
कौ धूम मनो तम दृष्टि नैंन मनो अरविंद हैं सरस सुवास विसेष ५५ टीका विरहिनी
को वचन यहि तम नही मानो चकवनिके विरह की आगि जो है ताको धूम है तम विषै सं
भावना करियतु है तम संभावना को विषय विरह की आगि के धूम की संभावना मैं करी
धूम संभाव्यमान वसतु है ग्रासपद संभावना करिवे को ठिकाना तम वसतु सो भी है ।
यातै उक्तास्पदावसतु उतप्रेक्षा भई याही तरह नैंन विषय तामैं अरविंदन की संभा
वना करी है उक्तास्पदावसतु उतप्रेक्षा यथा विहारी मकराकृत गोपाल के कुंडल सो
हत कान धस्यो समर हिय घर मनो ड्योढी लसत निसान ५८ टीका इहां कुंडल वसतु वि
षै काम के निसान वसतु की संभावना करी है उक्तास्पदावसतु उतप्रेक्षा एरैंन भई ।
अथ अनुक्तास्पदावसतु उतप्रेक्षा वरनन दोहा रंगित है मन अंग को अथ कारन निसि

पाइ बरषतिमानोअंजननहिं एरीगगनलषाइ ५७ टीका ग्रंथकारकैाफैलवोजांन्योसो
ईहांवरननीयहै सोईसंभावनाकोविषयठिकानाहै इहांतमकोजोफैलवोसोसंभावना
कोविषयसोनकह्यो तमअंगनकोलगैहैयहकह्यो औगगनअंजननकोंवरषैहै तमफैलिवो
उपमेयसोगगनकेअंजननवरषवेउपमानमैंअंतरभूतफैलिवो उपमेयनकह्यो वरष॰
वोउपमानकह्यो याहीमैंअंतरभूतहैतमफैलवो विषयैजुदानहींकियो यातैंअनुक
तास्पदावस्तूत्प्रेक्षाजानिये हेतुगमरीतिवरनन दोहा नहीहेतुफलसंभवे क्रिय
सैंवाचकजोग तहिंअनुक्तविषयाकहैंवस्तूत्प्रेक्षालोग ५८ यथाविहारी देख्यो
अनदेख्योकियोअंगअंगसवैदिषाइ पैठतिसीतनमैसकुचिवैठीचितहिलजाइ ५९
टीका इहांपैठतिक्रियासवदहै ताकेआगेसोवाचकहै हेतूत्प्रेक्षाफलोत्प्रेक्षाकोसं
भवनहींहै यातैंअनुक्तास्पदावस्तूत्प्रेक्षाजानिये क्रियाकेआगेवाचकआवैगोत
हांहीइहहैहोइगी दोहा ऐंचतिसीचितवनचितै भईओठिअलसाइ फिरिउझकनकोंम्रि
गनयनिद्रिगनिलगनियालाइ ६० टीका ऐंचतिसीचितवनचितैइहांभीक्रियाकेआगे

वाचक है येसे जानिये अथ सिद्धास्पदा असिद्धास्पदा हेतूत्प्रेक्षा वरनन दोहा मूल
मेंहदि अहेतु कौं हेतु करि संभावन तिहि ठोरि सिद्धासिद्धास्पद तहां हेतूत्प्रेक्षा और म
नो वली अंगनि कठिन तातें राते पाइ नायका के चरन आपही सों लाल हैं कठोर अंगा
नि वली सो नहीं कठोर अंगनि चलिवो अहेतु है अकारन है ताकौं चरन की ललाई कौ
...कौ संभावना करी औरु कठोर अंगनन को चलिवो सिद्ध ही है कठोर अंगन मैं तासदाथि
रति है यातें सिद्धास्पदा हेतूत्प्रेक्षा जानिये कठोर अंगनन चलिवो आस्पद है अथ अ
सिद्धास्पदा हेतूत्प्रेक्षा मूल दोहा चंद कंज सों वैर मनु लहत मुख समता चार ९२ टीका
चंद्रमा को कमल को परम स्वभाव करि सिद्धि वैर है नायका के मुख की समता की चाहि जो
है सो आस्पद है आस्पद नाम विषय को है सो असिद्ध है इहां यातें असिद्ध विषया हे
तूत्प्रेक्षा अथ सिद्धास्पदा असिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा मूल जहां अफल कौ फ
ल करि मानें फलोत्प्रेक्षा दुविधि वषानें यथा दोहा करि कुच धरिवे कौं मनो बांधी कं
चन दाम टीका करि कुच को धारिवो करै है यह तो सिद्ध है कंचन दाम बंधन करि जानी

9A

गईजोत्रिवलीबंध सोत्रिवलीसोंबांधैहै कहिकुचकोंजोधारननहीकरैहै अफलजो
हैं कुचधारन ताकोंफलकरिसंभावितकियोहै यातैंफलोतप्रेक्षाजानिये कुचधारन
विषयतोसिधिहै यातेंसिधविषयाफलोतप्रेक्षाकहीयतहै असिधासपदाफ
लोतप्रेक्षावरनन मूलदोहा पदसमताकोंकमलजमनजलसेवितहैवाम ९४ टीका
कमलकोंनायकाचरनसमताप्रापतिजोहै सोजलमैतपस्याकरिकेसोजानीगई सो
नायकाचरनसमताप्रापतिजलवासकोफलनही कमलतोसदाजलहीमैरहतहै
चरनसमताप्रापतिजोअफलताकोंफलकरिसंभावितकीयोहै यातैंफलोतप्रेक्षा।
नायकाचरनसमिताप्रापतिफलसोअसिधिहै यातैंअसिधासपदाफलोतप्रेक्षाजा
निये अथगम्योतप्रेक्षावरनन यथाविहारीदोहा करउठाइघुंघटकरतउसरतपट
गुझरोट सुखमोहैंलूटीललनलखिललनाकीलोटि ९५ टीका ललनाकीलोटित्रि
वलीजानिये देषुतहैनायकतेमानोसुषकीमारलूटीहै मानोसबदइहांनहीथो।
जामोजानतहै यातेंगम्योतप्रेक्षाजानिये यथाविहारी लगीअनिलगीसीजुविधि

10

करीषरीकटिषीनि कियोमनोवाहीकसरकुचनिकेवृअतिपीन ६६ टीका कुचनितेंव
कीपीनितातेंसिधिहै कटिकीकसरअहेतहै ताकौंहेतकरिसंभावितकीयोहै क
टिषीनिताकीकसरकमतीकौंभीकहतहै सोसिधिहीहै यातैंसिधास्पदाहेतूतप्रे॰
क्षाजानियै मानोसवटकी ठौरिवहीफैसेपाठहोइतौगम्यातप्रेक्षाजानिये दोहा रज
नीमहिनहिरविरहैदिवसिनिसाकरहीन यातैंमनोप्रतापजसरघुवरपरगटकीन ।
६८ श्रीरामचंद्रआपनोप्रतापजसप्रगटकीयोहै नहांहेतूठहिरायो रविचंदकौंराति
दिनहैनहीरहनो इहांसहेतनहीहै अहेतकौहेतमान्यारविचंदकौंनहीरहनोसिध
हीहै यातेसिधिविषयाहेतूतप्रेक्षाजानिये अथअसिधास्पदाहेतूतप्रेक्षावरनन
दोहा जगदिगहचितिजहचिसंगैलेकेअथयोभान यातैंमानोरैनिमैदेषतिनहीजन।
हान ६९ टीका लोगरातिमैनहीदेषैंकोंसूरजअपनीहचिकेसंगिजगतकेनेत्रनि
कीहचिलेगयोहै यहहेतूतनहीं ताकौंहेतूठहिरायो सूरजऔषिकीजोतिलेगयो
यहअसिधिहै यातेंअसिधिविषयाभई यथाविहारी ललनचलनसुनिचुपिरही।

10A

वोल्ली आपनईठि राष्यौ गहि गाहे भारी मनो गलगली डीठि ७० टीका चुपि रही न
ही बोली कैं गलगली डीठि ता नैवा के गले कों गाहो राष्यौ है तासों गलगली द्रिष्टि जि
गलको ग्रहन सो हेतु नही है ताकों हेतु करि भारी गरा भरि आयो ऐसो तो नही कह्यो है
द्रिष्टि कनि गल ग्रहन असिध है याते असिध विषया हेतु उत्प्रेक्षा जानिये पुनः मुदित होति
है कुमदिनी अलज जात सकुचाइ याते मानो चंद मुषि राषित वदन दुराइ ७१ टीका ।
चंद मुषी कैं वदन सों वदन छपावति है ताकों हेतु ठहिरायो कुमदिनी को फूलवो कम
लनि को संकुचित होनो सो हेतु नही है यह हेतु को हेतु ठहिरायो कुमदिनी को फूल
वो कमलनि को सकुचिवो दिन मैं सिधि नही है याते असिधि विषया हेतु उत्प्रेक्षा जा
निये ॥ असिधास्पदा फलोत्प्रेक्षा वरनन मूल दोहा चाहत सखि निज नैन को
वाहै एक अपार विरह तिन तिय के द्रिग निसि अकाह तं सूधार ७२ टीका विरहनी के नैन
नि सों जल धार का रिवो समुद्र को प्रवाह वहिवो ताको फल संभावित किया समुद्र
वहिवो हतै सिधि ही है याते सिधास्पदा फलोत्प्रेक्षा भई पुनि विहारी मानहु विधि

छछविस्वछतापिवेकाज द्विगवगयौंछनिकौंकिये भूषनपाइंयुग्रहाज ७३ टीका
ननकी जो अछछविताकी पूछनाविधिकौं राषनी अफलहै ताकौं फलकरिसंभावित
किया भूषनसौंतासोभाहैत्वहै ननकी स्वछतासिध हीहै यातें सिधास्पदप्रानियै पु
नः नीचैषिचैंनिनवनितउयरियैंचिकुचलेत ससिमुखिनवकरियौंमनोहीनकर
नकेहेत ७४ टीका कुचनिनवकैषैंचिवेतैताकेफलकरिकदिकीछीनिताहीहै क
रितैताछीनहीहै इहांभी अफलकौंफलकरिसंभावितकीयो अथ असिधास्पदाफलो
त्प्रेक्षावरनन मूल आवत उनरकौंसुरविषहैकाजलषिजाइ विधभयेहैं असमनु
पेरनमतठहिराइ ७५ टीका सुरजकौं उमरायनहोतोताकौंफलछांडिपलटिवोन
हीहै अफलकौंफलकरिसंभावितकीयो असकौफरवो असिधहै यातें असिधास
पदाभई पुनः दोहा फूलनिकीमालारचैहिनिछिनिकरतसिंगार नोहिकिधौंवसिक
रनकौं चाहतनंदकुमार ७६ टीका वसीकरनजेत्रमंत्रहैफूलनिकीमालाऔसिंगार
ताकोफलवसीकरननहीं अफलकौफलकरिसंभावितकीयो वसिकरनो असि

परै यातेंअसिधासपदाफलोतमेंछाभई पुनः उचहोरकुचबसिकियेनरसुरओसुर
पाल लरकेहैं मानोअबजीततिकोंपाताल ११ कुचकोलरिकिवोफलपातालजीतिवो
नहीं अफलकोंफलमानो पातालजीतवोअसिधिहै यातेंअसिधासपदाभई अथरू
पकातिसयोकति अतिसयोकतिरूपकजहांहोइबरनकोज्ञान कनकलतापरिचंद्रमाप
रैंधनुषद्वैवान १८ टीका जहांबरनककहीयेबरननीयज्ञाकोबरननकरीयेसोबरननीयसो
कवितामेंनहोइजामेजाइनहांरूपकातिसयोक्तिहोइ कनकलतासोनायका चंद्रमासो
मुषधनुसीभौंवानसेनेंन साध्यवसानालक्षनाकरिजानीपरतहै यथाविहारी उततेंदु
नइततेउतैछिनुनककहूंठहराति जकनपरतिचकरीभईफिरिआवतिफिरिजाति १९ टीका
चकरीउपमानतेंनायकाउपमेयजानिपरतिहै इहांरूपककोविषयनहीहै रूपकातिस
योकतिऐसेजानिये अथसापन्हवरूपकातिसयोकति होइछपायोकछुवहैसान्हवठहि
राइ सुधाभरेयेअधरवरनतवचंदकहैवाराइ २० टीका वहैकोअरथः रूपकातिसयोकति
[illegible] सोसापन्हवातिसयोकतिहोइछपायोकछुयाकोअरथ बरननीयवसत्नमेरा

१२ 12

षिवेकोलीयेष्ठकोईगुनलुपायोहोइ तहांसापन्हवातिसयोकतिहोइहै अरथयह प
रयसतापन्हनिरूपकातिसयोकति दोइतहांहैहितहांसापन्हवरूपकातिसयोकतिजानि
यै सुधाभयेंोयहिवदनतवहहांसुधातेंाकहीवचननकहै वचनवरननीयसोजानेजात
हैं यातेंसापन्हवरूपकातिसयोकतिभई जोवचनसुधाज्ञतवदनकह्योहुतोतोरूपकही
होतो यथामतिरामदोहा मदइंदुअरविंदुकेकहतसुधामधिवास सोमुषिमंजुलअध
रमैंतिनिकोप्रगटप्रकास ८१ अथभेदकातिसयोकति मूल अतिसयोकतिभेदकवहैऔ
रैवरनतजान औरैहसिवोदेषिवोऔरैयाकीवात ८२ टीका औरकोहसिवोदेषिवो
औरहै यानायकाकोऔरहीभांतिकोहै यातेंभेदकातिसयोकतिभई यथामतिराम दो
हा औरककूचितवनिचलनऔरेमृदुमुसकान औरैककुछपदेनिहैसकैनवयनवषा
न ८३ अथसंबंधातिसयोकति मूल संबंधातिसयोकतिजहिंदेतअजोगहिजोग या
पुरकेमंदिरकहैंससिलोंऊंचेलोग ८४ टीका ससिलोंमंदरऊंचेयहिअजोगतासोंजो
गवरन्यो यातेंसंबंधातिसयोकतिभई पुनः भूपतितेरेदानसोंजेहैमेरुविलाइ रहि

12A

हैहिनमननमैरग्योचकरईकेमृदव्वाइ ८५ चकरईकोमेहनासतसंभावनासोंउपज्योसंतोष
ताकोअसंबंधसोहै तोभीसंबंधवरन्योहै यथाविहारी पियप्राननकीपाहरूकरतिज
तनअतिआप जाकोदुसहदसापस्योसोतिनहूंसंताप ८६ टीका सोतिकोसोतिकीदु
सहदसामैंसंतापकोजोगनहीहै इहांजोगकस्यो अथअसंबंधातिसयोकति मूल अ
तिसयोकतिदुजीवहैजोगअजोगवषान तोकरआगेकलपतरूसोंपावैसनमान ८७
टीका इहांकलपतरूमैसदासनमानकोजोगहैतहांअजोगवरन्यो यातेअसंबंधाति
सयोकतिभई पुनः नगीवनगीनाचहेपेननितोहिनिहारि नहीसुधारसआदरैतो
वचषमृतिमेधारि ८८ टीका नगीवनगीमेचाहकोसंबंधहै ताकोअसंबंधवरन्योअसे
जानिये अथअक्रमातिसयोकति मूल दोहा अतिसयोकतिअक्रमजहांकारनका
रजसंगति तोसरलागतसाथहीधनुषैअरुअरिअंग ८९ टीका पहिलेंधनुषमैलागे
पीछैंअरिकेअंगमैलागे धनुषमैलागवोकारनअरिकेअंगमैलागिवोवानकोकारज
सोइहांनहीहै यातेअक्रमातिसयोकतिभई पुनः रामबरनमगषमेरत्योषडुसोगजह

१२ 13

रिधाम अथ चपलातिसयोकति चपलासुकतिजु हैनके जान होतहीकाज भईरु
कंककनसंदुहिकापीयगमनसुनिआज ४९ टीका पीयकोपरदेसगमनहेत ताको
नही जानहोतनहरीकंककनभईनायकपरदेसचलोनहीहै अंसाचु दोहा कंगनडावत
धनिघरीतिपिअगाईयाभईकअधीवाहैकगगलिअधीगईनईक ५१ वांहिकीचूरी
भईक पजावीभाषा अथअंतातिसयोकति अंसतातिसयोकतिसोएरववपरके
मनाहि वाननपहुचैअगलौअरिपहिलैंतितिजाहि ५२ जानेअसतातिसयोकतिभ
ई अंसच दोहा मानछुरयोपहिलैंपिछेआननमनाईस्याम पहलेमनावैपीछेमान
छुटैयहक्रमनहीरहाकर्यो अथतुल्ययोगता दोहा तुल्ययोगतातीनिविधिलछ
अ५४ नकहतवषान होइवरन्यअवरनकोएकैधरमसमान ५४ टीका अवरन्यजोहैता
कोअथवावरनजोहैताकोगुनक्रियाहूएधरम एकवरनैजहातहातुल्यजोगताजा
निये उनः कोककुंभनहिलहतसषिसोभाउरजउतंग वेननैननवांकेभयेप्रगटतजो
वनअंग ५५ टीका प्रसन्नतिकुच वरननकेप्रसंगपाइ अप्रसन्नतकोककुंभकोसो

टीकापहिले वानअगमैलगे नवपहुंगिरेयह क्रमनहीहै॥६.

१२

13A

भावैंनपावैंनोयहएकधरमकह्यौ प्रसत्तुतिजोवनवरननकेप्रसंगपाइप्रसत्तु[illegible]न
हीहै वैननैनवाकपनोएकधरमकह्यौ यहअप्रसतुतहै पुनः दोहा वनीकमलकीछै
रनीवदनसंकोचतिजाइ इहांप्रसत्तुतिचंद्रोदयकालमेंकमलअरुरनीवरननीयप्रका
सैमेंदुरतिहै कमलअरुरनीताकेवदनकीसंकोचहूएकक्रियाकोअन्वैदिखायो या
गेगुनकोअन्वैदिखावतहै यथा नुवअंगकीसुकुमारतालखिभाषतमतिमोरि चंप
कजंदसमालतीलगतगुलाबकठोर ५६ टीका इहांनायकाकीसुकुमारतावरनन
प्रसत्तुतिवरननीयचंपकआदिताकोएककठोरताहूएगुनताकोअन्वैदिखायो अथ
दूसरीतुल्यजोगिता मूल दोहा गुनसोंजुहितुतकिएसोसमकविकहतअनूप इंद्रप
नदजमलोकपतिवरनऔरयहभूप ५७ टीका इहांवरननीयराजासोगुणकरि
इतकिएवडेइंद्रादिकतासोसमकरिकह्यौ अथतीसरीतुल्यजोगिता मूल दोहा स
त्रमित्रपैविरतिसमहोइसुऔरहूप्रकार गुननिधिनीकेदेततूतियकौंअरिकोहार ५८
विरतिनामविवहार अथदीपक दीपकवरन्यअवरन्यकोएकैधरमसमान गिरिग

ग्र

वनीअवरन्य
२

हगहगुनवंतकोहोतउचतामान ९९ गुनवंतवरननीयगिरिद्रुमादिकअवरननीयता
कैउचताधरमएक गजमदसोंन्रिपतेनसौंसोभालहूतवनाइ ग्रंथांतरे पुनःदोहा उ
पमानरउपमेयसौंइकपदलगतसुहाइ दीपकताकोंकहतहैंजोकविमैंमरसाइ १००
यथा घनकरिदामनिलसतिहैनीलोवरिकविवाल गजमदसोंन्रिपतेजसोंसोभाल
हुतिविसाल १०१ अथआव्रितिदीपक दोहा मूल आव्रितिदीपकतीनविधिआव्रि
तिपदकीहोइ पुनहैंआव्रितिअरथकीदूजैकहियेसोइ १०२ पदअरुअरथदुहूनिकी
आव्रितितीजैलेषि वनवरसतहैंरीसषीनिसवरसतिहैदेषि १०३ आव्रितिकोअरथ ।
फेरिपहनो टीका निसाकोवरसवोअंधकारहोनोयहपदकीआव्रिति पुनः फूलेवि
लुकदंवकेकेतकिविकसीआहि टीका विकसवोफूलवोअरथएकहै यहअरथाव्रि
ति मूल मतभयेहैमोरअरुचातकमतसवाहि १०३ इहांसवदअरथएकही अथप्रति
वसतूपमा दोहा मूल प्रतिवसतुपमवाक्यहैउपमेयरउपमान तिनिकेधरमजुएे
कहीजुदेजुदेपरमान १०४ सोहतभानप्रतापकरिलसैचापकरिसूर विवधरसोप्र

14A

नसेहदैयेलनिसैयैवैननिकूर १०५ टीका भानउपमानरूरमाउपमेय प्रतापउपमान
वापउपमेय लसैंसाहैंपदकेअरथएकहै सोभिवेलाकौंजुदाजुदापदकरिकह्यौ ज
हाउपमानउपमेयकौएकसाधारनधरमजुदाजुदाकरिभिनपदसौंदिखाइयेसा अ
थदृष्टांतअलंकार दोहामूल जहांविंवप्रतिविंवसौ उहूवाकदृष्टंत कांतिमंतससिही
वन्योतूहीकीरतिवंत ६ टीका जहांउपमेयवाक्यअरुउपमानवाक्यकोजुदोजुदोधरम
होइ औरौविंवप्रतिविंवकरिभावदिखायोहोइ विंवप्रतिविंवकोअरथः एकवातकीछा
याएकवातमैपरै मिलतीवातहोइतहांदृष्टांतकहीऐ कांतिकीरतिकोविंवप्रतिविं
वभाव यथाविहारी दुसहदुराजप्रजानिकोकोनवढैदुषदुंद अधिकअंधेरोजगि
करतिमिलिमावसरविचंद १०७ अथनिदरसनालंकारः मूल जहांउपमेयस्त्र
वाक्यसौंउपमावाक्यसंजोग जोसोकरिकैनिदरसनाकहतसवैकविलोग १०८
टीका जहांउपमेयवाक्यारथसैंउपमानवाक्यारथकौंजोसोसवदकरिसंजोगकोअ
रथएकिताकरै तहांनिदरसनाजानियै पदनिकौसमूहसोवाक्य ताकोअरथसो

१५

15

वाक्यारथकहीये पदकौअरथसोपदारथजानिये दातासोमजोअंकविनुएरनचंदम
कास जोइहदारमीठेवचनसुवरनमांहिसुवास टीका दाताकोसोमयचैा सोउप
मेयवाक्यारथ औरएरनइंदुकीअकलंकितासैाउपमानवाक्यारथ ताकोजोसो
करिएकठहिरायो दाताहोइकटुवचननाकहै एरनचंदकलंकरहितहोइतौदो
ऊसमानहैयहअरथ जहांएकपदमैंएकपदकोआरोपहोइसोरूपककहावै सु

मैवद्रपदारथ

खचंद इहांसुखपदारथकोआरोपकीयोतातेरूपकभयो दाताकोजोमीठावचन
हैसोसुवरनसुगंधहोइतैसोएकहै इसबीनिरदरसना मलदोहा रचैजहांउपमे
यमैंउपमाधरमसुआनि उपमासेउपमेयकोधरमधरैसुवषानि यथा खंजन
कीसविचपलतातगहतनिहारेनैन मलटीतेरअम्बकीपानलईहैमैन ११ किंवा
नवअधरनिकीअरुनताललईसुविद्रुमऐन ॥ टीका उपमेयनैननमैखंजनउपमान
ताकोधरमचपलतासाषी अम्बउपमेयताकोधरमजलटीसोउपमानपोनमैसाषी
यथा मतिराम दोहा जवकरगहतकमानसरदेउपरनिकौभीति भावसिंघमैंपा

१५

15A

ईयेसबअरजुनकीरीति १२ टीका इहांभावसिवउपमेयमैउपमानअरजुनकोधरम
भयदेनाराघो अथदूसरीनिदरसना दोहामूल जहांअसतसतकौंकरैक्रियहीसौंउ
पदेस तीजीकहतनिदरसनाजोकविमाहिसुदेस १३ यथा दोहा रविसौंनसितमबोध
ईजगतविरोधीनास जैनवनफलनिजवृधिसमिकरिहितकुमुदविकास १४ टीका ज
हांक्रियाकरिअसतिअरथकौंसमुझावै किंवासतभलेअरथकौंसमुझावै तहांनिद
रसनाजानियै रविसौंअंधकारकीनासक्रियाहै सोजगतविरोधीकीनासक्रियाकौंसमु
झावैहै आपनीविधिक्रियामैंहितकौभलोकरनोचहैमायहिजितायो एरवारधदोहामैंअ
सदरथनिबंधन उत्तरार्धमैंसदरथनिबंधनाकरी अथअसदरथनिबंधन यथा दो
हा मधुकरहरिहमसौंतजीकरिकैपरमसुप्रीति प्रगटकरतहैजगतमैंयहैकुटलकी
रीति १५ टीका प्रीतिकरित्यागजोहै सोकुटलकीरीतिकौंप्रगटकरतिहै अथसदरथनिबं
धना यथा दोहा हरिमुषलषिलोचनसषीसुषसौंकरतविनोद प्रगटकरतउज्वलप
नकौंहोहरयतैमोद १६ अथव्यतिरेकालंकार मूलदोहा व्यतिरेकजउपमानतैंउपमेअ

वे　　　　　　　　का

१९

16

पिकौ देषि मुष बैंग्यंवुज सो सषी मीठी वान विसेषि १७ टीका जहां उपमांन तैं उपमेय
मैं अधिकाई होइ तहां अतिरेक जानिये अथवा उपमेय तैं उपमान मैं अधिकाई होइ
मीठी वान उपमेय मैं अधिकाई भई जानिये यथा विहारी पिय तिय सौं हसि कै कह्यौ ल
षै दिठौना दीन चंद मुषी मुष चंद तैं भले चंद सम कीन १८ टीका याकौ मुष चंद के
समान तें कीयौ है तौ भी भलौ है उपमेय मैं रूप की अधिकाई तू उरवसी सह्स है याका
स्वरग मैं वास है स्वरग मैं वास उपमान मैं अधिकाई इत्यादिक जानिये अथ फेर उपमा
न मैं विसेष मूल वंधु जु हिसह ज्ञे मलिन कौ सधरै अविरोध जानौं द्विय न द्विग्रान से
आकार है विसेषि १९ टीका जो भी वाचक नही है तौ भी उपमान उपमेय जान्यौ परै
है द्विपान उपमान मैं आकार की अधिकाई है कहूं उपमान उपमेय मैं विसेष नही तौ
भी यही अलंकार है पुनः रहै पिय सुषदृहूं निमैं दो उवेहा वनकाम लोचन कौं सुषदेत
हैं आनन अौ हिमधाम २० टीका मुष उपमेय उपमान चंद्रमा तामैं विसेष नही है अ
थ सहोक्ति मूल सो सहोक्ति दुहूं संगि ही वरनै रस सरसार कीरति अरि कुल सं

१६

16A

गहीजलनिधिपहुंचीआइ २२ टीका अरिकुलअोकीरतिकोसाथकरो कोईराजाकोंक
हतहै इहांवीररससरसातहै रससरसातयाकोअरथ नहांआछोलगै पुनविहारी छु
टतिमुठीसंगहीछुटैलोकलाजकुलचाल लगेदुहूनिइकिवेरिही चलचितनैनगुलाल
टीका लोकलाजकुलचालछुटिवेमैसाथ चलचितनैनगुलालसागिवेमैसाथही या
तेसहोकतिजानियै अथविनोकति मूलदोहा हैविनोकतिद्वैभांतिकीप्रसतुतकछुवि
नहीन सोभाअधिकीलगैप्रसतुतकछुयकहीन २३ यथा विधमनरंजननहिगअ
लीअंजनविनुसोभैन वलिसवगुनसरसातहूंरचहथाईहैन २४ टीका प्रसतुतनामव
रननीयसोनैनसोअंजनहीनहैं हथाईविनाहुवहुतआछोहै मतिरामयथा विषयनतें
निरवेदवैंध्यानज्ञानगज्ञतनेम निफलजानियैएकविनुप्रभुपदपंकजप्रेम २५ पुनः
देषतरीपतिदीपकोटेतमानअहदेह राजतएकयतंगमैविनाकपटकोनेह अथसमा(
सोकति मूल दोहा समासोकतिअप्रसतुतैफुरैजुप्रसतुतमांफि कुमदनिहूंफलतिभ
ईदेषिकलानिधिसांफि २७ टीका नहांकोईप्रसतुतकोवरननकरैतामैअप्रसतुतफु

निरवेदनाम
वैरागकोX४
२

17

१०

रै सो समासोक्ति जानियै इहां सासिकौं वरनन करै है तहां कुमुदिनी इस त्रीलिंग अस
वदतैं औ कलानिधि पुलिंग सबदतें अप्रसतुत नायका नायक भी जांन्यौ जात है य
थाविहारी नहि पराग नहि मधुर मधु नहि विकास इहि काल अली कली ही सौं वंध्यो
आगै कौंन हवाल २८ टीका जो भवर ही सौं कहै है नायक नायका अप्रसतुत फुरै है सो
समासोक्ति कहीए नायक भी है तो प्रसतुत ताकुं जानियै अथ परिकर अलंकार मू
ल दोहा है परिकर आसै लियै जहां विसेषन होइ हिमकर वदनी नायका ताप हरति है
जोइ २९ टीका जैसें दरजनावै सो विसेषन कहीए जाको भिन्य की जै सो विसेष जानीयै
हिम नाम वरफ कौ हिम सी है किरन जाकै ऐसो चंद्रमा चंद्रमा सो है वदन जांहि नाय
काको सो तापकौं हरति है हिमकर वदनी विसेषन है सो कह्यो… थकौं लीयें है जो
सीतल होइ सो ई ताप हरै यथा विहारी वाल वेलि सूखी सुखद यहि रूखी रुख घाम फेरि
डहडही कीजियै सुरस सींचि घनस्याम ३० टीका घनस्याम श्री क्रिस्न कौ विसेषन है।
घनस्याम होइ सो ई सींचत है अथ परिकरांकुर अलंकार: मूल दोहा साभिप्राय विसे

१८

17A

पनहिपतिकृतिअंकुरनाम सूयेहीपयेकेकहेनैऊनमाननताम ३१ टीका ताहीमा
ननहैपावानकोपुहुपकरैहै तामसवदसाभिप्रायविसेष्यपदहै तामनामपुहुपकोकही
यतहै यथाविहारी जसम्रयनसदेषतिनहीदेषतसाचलगात कहाकरैलालच
भरेचपलनैनचलिजात ३२ टीका नैनयहिविसेषपदहै तामैयहअरथहै नयनाम
नीतिकोहैसोनीतिजामैनही ऐसेनयन सोजसम्रयनसकोंदेषैतौ अथसलेषाल
कार सलेषअलंक्रितअरथवहुतहांसवदमैहोत होइनपूरननेहविनुअथबहुतिटी
पउहोत ३३ टीका अनेकअरथजहांसवदतिसैरहैं एकवातिटीवरन्यसौंलागै एकवा

वरन्य ५४

तिअवरननीयसौंलागै दोउवरन्यसौंलागै औदोउअवरन्यअवरन्यसौंलागै ता
हांसलेष नेहनामतेलकोऔप्रीतिको उदोतनामषकोप्रकास औदीपकोप्रकास।
मुषवरन्यदीपअवरन्यताकोसलेष दोउवरन्यवरन्यकोसलेषहमसलेषकविताव
नाईहै ताकोदोहा पीनपयोधरअंगछविनगधारैअभिराम हरैमकेसीमानकोछिदा
वनहितस्याम ३४ पयोधरनामकुचकोऔपयोधरमेघकहीए ननानामहीनाऔन

१८

18

गपहारकौंकहीयतुहै अभिरामनामसुंदरकौ सोदोउहैं केसीदैत्यकेसीअपसरा
नाम विंद्रावनहितविरजोगोपसमूह ताकौआवनसोंहैहितजाकौ श्रीराधाजीकौ
विंद्रावनहितहै स्यामसखीक्रिलाकिंवास्यामाकेमकारकौरहस्यपहैगोहै जैसेवाला
कौंवालकहीयतुहै स्यामासोलहवरषकीकौनामहै इहांदोउवरनवरनकहेहैं स्या
मक्रिसनस्यामाराधादोउजानिये अथअप्रसतुतनिकोलछ दोहा अतिअकुला
इसिलीमुषलिवनमेंरहतसहाइ तिनिकमलनिकीहरनिछविहेरैनैनसुभाइ ३६ टी
का सिलिमुषनामबालकाऔभवरकौजानिये वननामजलकौउद्यानकौ इहांहरि
नऔरभौरदोउअवरनहैं ताकौसलेषकस्यौ हरिनअलंकारसकतिसोंजानिये अथ
अप्रसतुतप्रसंसाअलंकारः मूलदोहा अलंकारदोइभांतिकौअप्रसतुतपरिसंस
एकवरननप्रसतुतबिनादूजेप्रसतुतअंस ३६ टीका एकतौजहांअप्रसतुतहीकोव
रनतहोइऔरपरिनहीलावै दूसरोजहांऔरिपरिलावै सोपांचभांतिकौहै ग्रंथक
रतानैकठिनजानिकेदूसरेकेभेदनहीरहा दिषाए एकहीभेददिषायौहै यथा धन

१८

18A

वे

गरिचरचाज्ञानकीसकलसमेरुपघरेत टीका इहांकेवलज्ञानचरचा कीवड़ाईक
रैहै औरवातिनहीलागतहै पुनः विषराषतहैकैंठिसिवआपध सौउदिहैन २७ टीका
सिवजैविषरुद्रताकोआदरकीयौ याहीतेंआपगंगाजलधास्यो सीतलताकेलियैं ग
जानैएकरुद्रकोउराष्योहै ताकेदवाइकेनमितएकुऔरकौंभीवसकीयोहै इहांऔरु
पविलागैहै याकौंअसौकतिभीकविवरकहतहैं कोईजनजीविकाविनाआपनौघरछो
डिकैदुषीभयौहै ताकौउकति परेवासौंपरेवातामकबूतरको यथाविहारी पटपांषभ
षुकाकरैसपरपरेवौसंगि सुषीपरेवाजगतमैंएकैतुहीविहग २८ टीका इहांपरेवा
हौपविलागैहै अन्यपवितनही एकराज्ञानैनीचकौवड़ायौहै यहसभकारनमेराकरै
गौ तातविकाहुकीउकति दोहा कांधैकेसरिवांधिकेजोकीनोसिरराज फुकरवोंक
रिहैकहांकलिकुलकंपतिराज २९ अथप्रसन्नताऊपर मूलदोहा प्रसन्नतअकुरहैकि
वैंप्रसन्नतिमेप्रसन्नताउ कहांगयोअलिकेवरेछाडिकैकोमलजाइ ३० टीका प्रधानजो
प्रसन्नताताकोकुकाविनहारो औसेहसरेप्रसन्नतकोवरननकरैहै वरननीयमेवरननीय

१९

19

नासो

निकसे है सखी कहै है जो भौंरा मालती कौं छाडि के केवरा के फूल पै न गयो हो सो अब सब्रत
है हूसत प्रधान प्रसून तन नायक कौ उपदेस भी निकसै है ऐसौ नायका छाडि कै वा के पा
स कौं आगयौ यथा मतिराम दोहा सुवरन वरन सुवास जुत सरस दलनि सुकुमार ऐ
से चंपक कौं तजत तिन्है भवर गवार ४१ अथ परयायोकति मूल दोहा परयायोक
ति प्रकार है होरू कछु रचना सों बात मिस करि कारज साधिये जो कछु चित हित सुहात ४२
टीका जो बात को सूधी भांति कहि सकीये ताहि बात कौं कोई और ही भांति सुंदरता सों व
नाइ कै कहिये परयायोकति तहा जानिये चलु रचै है जिनि तुव गोरे हिन ग्रु नदारी माल ।
वमर देउ वैठो इहां जातु अनाव न नताल ४३ टीका षंडिता नै यह कह्यो न हो पिय सों न
मरयो हूत नायका पास सौं आए हो याही बात कों सुंदरता सौं कही जैसे आउ वैठो या को
ह क्यों होइ तहां पधारीए विराजीए ऐसे कहीए यथा मतिराम जो के लोचन कमल नैं है
कुवलय कमल प्रकास सोभा ऊ भूपाल के हिये करै निवास ४४ टीका भगवान
क है नैनो ताकों एक चमतकार सों कह्यो चंद्रमा सूरज दोनो भगवान के नैत्र है यथा वि

प्रथम

२

१९

19A

हारी लखिलोयननिलोयननिकेकोयनहोयनस्याम कौंनगरीवनिवानिवोकनिद
कोरितराम ४५ टीका सखीवचननायकसोंजोहोइकहैनो कौंननायकापासजावो
गकौंनसोंसंभोगकरोगे सोएकलालिमसोंकह्यो कौंनकीगरीकहियेगली ताकौं
निवाजोगेकहाकिमनहूभयोहै यहरचनासों अथछलसोंकारजसाधन यथाविहारी
लरिकालैवेकेमिसनिलंगरमोढिगआइ गयोअचानकआंगुरीछातीछैलछुवाइ ४५
टीका लरिवेकेछलसौंइहसाथीछातीकोछुवेनी अथव्याजसतुति मूलदोहा निं
दासतुतसोहोतजहिसतुतिनिंदाकोज्ञान व्याजसतुतितासोंकहतजोकविमाहिसयान
४६ टीका निंदासोंजहांसतुतिकोज्ञानहोइअौसतुतिसोंजहांनिंदाकोज्ञानहोइ मानी
जातनरकतरककौयहअचरजहैसोहि स्वरगचढापपतिनतैंगंगकहांकहैतोहि ४७
टीका इहांगंगाजीनिंदासोंगंगाजीकीसतुतिनिकसैहै पुनः विहारी कहांलइतेहि
गकरेपरेलालवेहाल कहूंमुरलीकहूंपीतपटकहूंलकुटिवनमाल ४८ टीका तेरेहि
गअैसेकहाहैजोलाडलेकीये लालजीविहालकोरिडारेहैं नेत्रनिकीनिंदासोनेत्रनि

केले

कीय

कौहूपन्याक्षेपयहस्तुतिनिकसैहै अथस्तुतिमैंनिंदा हमारोकीयोसभाप्रकासकौ
दोहा नियतोविनपियकाजकौकरिहै तनमनलाइ भेजोदोपदरीवरीआइहेदूथ
नाइ ४९ अन्यसंभोगदुःखिताकेवचनसौंनिंदानिकसीदूतिकाकी अथनस्तुतिसौंस
तुतिहोइतहांभीयहीजांनिये दोहायथा हरिहरमैरतिरहतहैंकरतनिरंतरध्यान ये
सेसंतहूसेवहींतोहिसदाहिमवान ५० टीका इहांसंतनिकीस्तुतिसौंहिमालयकी
स्तुतिनिकसी पुनः दोहा धनिरसनाअपनेगुननिलहतिसदाप्रतिचैनि वाकेक
टिमैंरहतिहैंवासकियैंदिनरैनि ५१ टीका छुद्रघंटिकाकीस्तुतिसौंकटिकीस्तुतिनि
कसी अथव्याजनिंदा व्याजनिंदनिंदाहिसौंनिंदानिकरैहोइ सदाछीनकीनौंनत
हिंचंदमंदहैसोइ ५२ टीका एककीनिंदासौंजहादूसरेकीनिंदानिकरै तहांव्याजनिं
दाजानिये विरहनीकौवचनहै इहांविधाताकीनिंदासौंचंद्रमाकीनिंदानिकसी।
पुनः मतिरामकौदोहा मगटकुरलनानाकरैहमपरिसासनसरोस मधुपजोग
विषउगलिवोकहातिहारोदोस ५३ टीका इहांमधुपकीनिंदासौंश्रीकृिसनकी

20A

निंदानिकसी होसश्रीकिसनकौहै पुनः दोहा कोकिलकुलरवसोरचैविरहनिकेउरसा
ल गाबतहैतिहिसीसपैतिरदयमहारसाल ५४ टीका इहांग्रावकीनिंदासौंकोकिलकी
निंदानिकसतिहै अथ आक्षेप मूल दोहा तीनिभांतिआक्षेपहैएकनिषेधाभास पद
लैंकहियेव्यापककुवहफिरिफेरियेनास ५५ दूजैनिषेधजुविधिवचनलछनतीनौलेषि।
हैंनहिहूतीग्रगानितैंतियतनतापविसेषि ५६ टीका निषेधकौआभासहोइजहांसोय।
यमआक्षेप जोहूतीहैताकोहूतपनोकौंकरिजाइगो विसेषवाननिकसैहै गवहीना
यकेकोंग्रानमिलाउगीयहव्यापनिकस्यो पहिलैंव्यापकहैफेरिविचारिकेताकोनिषेधक
है करिवेकोंकहैताकैनहीकरनौनिकसैसोहूसरोआक्षेपयथा सीतकरनदेरसतन्य।
यवांतियजुबआदि जाहुदईसोजुनमटेचलेदेसतमजाहि ५७ टीका चंद्रमाकोदरस
नचायौप्रथम फेरिविचारिकेकह्यौ पियाकोजबहैतौकौचंद्रदरसन गह्यतपतिका
कीउकतियथा तुमपरदेसजाहुयहविधिकरतअवानकोउपदेस सोविधिजाहिदेसजा
नहैांनहांमेरोजनमविधातादेइ जनमकीप्रारथनासौंअपनोमरनौजितायोपियापि

काहि

यसौं तासैंमतजाहू यहनिषेधछप्यो है अथ निषेधाभास भयो यथा सतिराम दोहा
हौं न कहति तुम जानि हो लाल वाल की वात अरु वाउ उगानत गिरत हैं होनि चहत उत
पात ५८ टीका कहति हैं फेरि कहै है हौं न कहति हौं अरु उ उगन इहां रूपक है पहि
लैं कहि यै फेरि विचारि कै फेरि यै निषेधाभास अाक्षेप तौ सरी जानिये यथा विहारी सो
ठा मोहूं दीजै मोष ज्यौं अनेक पतिन न दियौ जौं वांधै ही तो षतौ वांधै अपने गुननि ५९
टीका पहिलै मोक्ष मांगि पाछै फेरि कह्यौ जौं मोष नहि देहु तौ मति देहु जौं तुम वांधै ही तौ
वहै तौं अपने गुननि सौं वांधौ विधि मैं निषेध है यौं जानिये पुन विहारी सदन सदन
के फिरन की सदन छुटै हरिराइ रुचै तितै विहरत फिरौ कत विहरत उर आइ ६० टी
का विहरत फिरौ यह विधि कही अरु ठौरि मत जाहु यह वक्ता वाय अंक प्रभाव सौं
निकसै है पुनः विहारी मोहूं सौं वातनि लगे लगी जीभ जिहि नाइ सोई लै उर लाइयै ।
लाल लागियत पाइ ६१ टीका उर लाइयै यह विधि अरु पाइ मत जाहु यह निषेध छ
प्यो है याही मैं जानियै अथ विरोधाभास लक्षण दोहा भासै जहां विरोध सो उ है विरोधभा

21A

स सुधिआएसुधिजातहैवामुषचंदमकास ८२ टीका विरोधभासेजहांविचारैंतेंनांहीहो
र तहांविरोधाभासजानिये सुधिआएसुधिजातहैयहविरोधभासहै आएतेकैसेजातिहै अ
रथयहनायकाकोंमुषचंदमकासयादिआएतेमूरछाआतीहै यहविरहीकीउकतिहै पु
नः विहारी मैंमैंप्यासेर्ईरहतनैनोंनैंनोंपियततअघाइ सगुनसलोनेरूपकीजुनिचषतिषा
बुझाइ ८३ टीका सबदमैविरोधहैंअरथमेंनहीनैंनोंनैंनोरूपकोंदेषेतोंताचाहिभरेरहतहैं ।
पुनः याअनुरागीचितकीगतिसमुझैनहिकोइ ज्योंज्योंबूडैस्यामरंगत्योंत्योंउजलहोइ ८४
टीका स्यामरंगमेंबूडैउजलहोइयहविरोध अथविभावना मूलदोहा होतिछभातिविभा
वनाविनहीकारनकाज विनजावककरीतेचरनअहनलषेहैंआज ८५ टीका जावकतैंतो
चरनलालीकोकारनहै तांहिविनाचरनमैललाईकारजभयौ उपजैसोकारजकहिये जा
तैंउपजैसोकारन सबरनकारनगहनेकारज पुनविहारी विनतीरतिविपरीतिकीक
रीपरसिपियपाइ हसिअनवोलेहीदयोउतरदियोबुताइ ८६ टीका वोलिवोउतरदेनेको
कारनहै वचननहीउतरकारजभयौ दूसरीविभावना मूल हेतअपरनतेंजहांकारजहोइ

व

रनहोइ कुसुमबानकरगहिमदनसबजगजीत्योजोइ ६७ टीका जीतबेमैहेतुकहियेका
रनवानहै तामैतीछुनताकठोरताजनहीहै तासौंजगतकौजीतबोकारजभयो अथती
सरीविभावना यथाविहारी लीजपर वसौंतिनसनेभूषनवसनसरीर सबैमरगजेमु
हकरीउहीमरगजेचीर ६८ टीका सौतिनकेमेलैमुहकरीयहकारन ताकोकारनम
रगजोचीरनही मरगजनामसलेकाहै वहुतवेसबसत्रुपहिरैतवसौंतिकूडै वसत्र
मैवहुमलाय पलोउजलितानही तौभीवानायकानेकारजकीयो अथतीसरीविभावना
प्रतिबंधकके होतहीकारजएरनमानि निसिहिनस्रुति त संगतिहुँनैनरागकीषानि ६९
टीका इहासलेषमैस्रुतिकहीयेवेदताकीजाकोसंगतिहोइताकौरागहुषनहीचाहीये
स्रुतिसंगतिप्रतिबंधकहैरागकोसोतऊभयो रागमैसलेषहै रागनामअनुरागकोक
हिये पुनः चलिवलिमोहनदेषियेविरहहूवरेगाततैनवारिसीचतितऊहियेतापअ
धिकात ७० टीका वारिसीचबोतापअधिकाइवेकोप्रतिबंधकहै तौभीकारजभयो ।
अथचौथीविभावना मूलदोहा जवैअकारनवसतुतैंकारजपरगटहोत कोकिलकी

त

रंगकोश्री

22A

वानीअवैवोलतकूजोकपोत २१ टीका कोकिलकीवानीवोलिवेकौकारनकोकिलहै कछूतरअकारनहैतातैंकारजभयौ कपोतऔंसषदोनोनायकाकेकंठकेउपमानहैं य थापुनःमतिराम हूसतवालकेवदनतैंयौंछविवहैअतूल फूलीचंपकवेलितैंझरत चंवेलीफूल २२ टीका चंपककीवेलितैचंवेलीकेफूलझरवेकौकारननहीं पुनः ईहि कांटेमोपाइगडिलीनीमरतिजिवाइ प्रीतिजनावतभीतिसौंमीतजुकाढेआइ २३ टीका । कांटाजिवाइवेकौकारननहीहै सोजीवोकारजभयो हमारीकरीविहारीकीटीकाहरिप्र कासमेंहांहूंसेअरथमैंउदाहरनजांनिये अथपंचमीविभावना मूलदोहा काहूकार नतेंजवैकारजहोइविरुध करतमोहिसंतापयहिसषीसीतकरसुध २४ टीका काहूविरु धकारनतेंजवकारजउपजैसीतकरविरोधीहैतापकौ तासौंतापभयौ पुनःविहारी । कियेजुचिवुकउठाइकेकंपितकरभरतार टेढीयैटेढीफिरतिटेढेतिलकललार २५ टी का टेढेतिलककौहैसोलाजकौकारनहै गरवकौकारननहीतासौंगरवकारजभयौ । अथषष्ठीविभावना मूल पुनकछुकारजतैंजवैउपजैकारनरूप नैनमीनतैंदेषीय

२३

23

नमलितावहतअनूप ७६ टीका नदीसौं मीन उपजति है इहां मीन कारज तासों नदी का
रन है सो उपजति है नेत्र मीन तासौं अच्छकी नदी जानिये ७७ यथा मतिराम भयो।
सिंधु तैं बिधु लक विवरनन विना विचार उपज्यो तो अथ चंद तैं होप पयोधि अपार अथ
य विसेषोकति विसेषोकति जहि हेत सौं कारज उपजै नाहि नेह घरत नहि है न उ
कामदीप चित मांहि ७८ टीका हेत दृढ है कारज नहीं उपजै दीपक जरै है नेह नहीं
घरै है नेह सबद सै सलेष है तेल कौ औ प्रीति कौ नाम नेह जानिये पुनः बिहारी नेह
नैननि कौं कछु उपजी बड़ी बलाइ नीर भरे नित प्रति रहैं तऊ न प्यास बुझाइ टीका
नैन नीर भरे पुष्कारन सौं प्यास बुझाइबे कौ कारज नहीं भयो अथ असंभव कहैं अ
संभव होत जहि बिन संभावन काज गिरिवर धरिहै गोप सुत को जानै यह आज ८० टी
का कारज की सिधि होइ संभावना बिना निरादरि कहत है गोप को बालक गिरवर कौं
धरैगो यह असंभावित है कारज सिधि भयो पुनः एक वंक तिन ठौरि तैं नहीं लषे गउन
प्यान ऊ बिज्ञावसि करि है कहं ऐसे सुंदर कान ८१ अथ असंगति मूल दोहा तीन असं

लंकार

२३

23A

गतिकाजम्रहकारनन्यारेठाम औरठौरविहीकीजियेओरठौरकोकाम ८२ औरकाज
आरंभियै औरेकीजैदौरि कोकिलमधुमातीभईऊमतअवामौर ८३ टीका कारनमधु
पानमसतीकोसोकोकिलमैरहै ऊमितोकारजमौरसालकेमौरमैभयोयातेअसंग
तिजानियै पुनःमतिराम राधाकेद्रिगबेलमैमनदेनंदकुमार करनलगीद्रिगकोरि
सौभईछेदिउरपारि ८४ टीका लागिवोकारनऔरठौरिछेदवोकारजऔरठौरि तो
तेप्रथमअसंगतिजानियै पुनः मल तेरेअरिकीअंगनानितिलकलगायोपाइ मोहि
मिटायौनाहिप्रभुमोहिलगायोआइ टीका हेराजनतेरेउरसौतिलकपावनसौए
छिकैसत्रुनिसुंदरीभागी तिलकलिलारमैलगायोचाहियै वैरीतियदृहनिपावन
मैलगायो औरिठौरिकौकामऔरठौरिकीयोयातेंदुसरीअसंगतिजानियै यथाविहा
री पलनपीकअंजननअधरधरेमहावरभालि आजमिलेसुभलीकरीभलेवनेहोलाल
८५ टीका इहांपीकआदिकठिकानेपेनही पुनः मोहमिटाइवेकोप्रवितिभए आइ
केमोहलगायो यातेंतीसरीअसंगतिजानियै यथामतिराम उदितभयेहैजलदते

जगकौंजीवनदैन मेरेजीवनलेतहैं कौनसुभैहकहैन ८७ टीका जीवननामजलकौ
है सोदैनोआरंभोजलदमेघुजोहै जीवनलैनलग्योऐसेविरही कोउकहतहै अथवि
षम विषमअलंकितनीनिविधिअनलायककौसंग कारनकौरंगओरकछुकार
जओरैरंग ८८ टीका जोलायकनहोइताकौसंबंधिमिलावनोजहांहोइतहांजानो
मूल दोहा ओरभलेउदमकीयेहोतवुरोफलआइ कहंकोमलतननीयकौकहांकी
मलकीलाइ ८९ टीका तियकौजोकोमलतनहै सोकामअगनिकेलायकनहीं
कामकीआगिकौंकठोरपदारथचाहियेजोसहै कहांराधिकाकौवदनकहांचांद
सकलंक कहांसुंदरीगोपकीकहंकुवजातिरवंक ९० मूलदोहा षडगलता
अतिस्यामतैउपजीकीरतिसेत सुषिलायोवनसारतैंअधिकतापतनदेत ९१
टीका षडगलताकारनसोस्यामहै कीरतिकारजसोउजलकस्यो पुनः पीत
वीजरीस्यामघनप्रगटतहै यहिदेषि प्रगटतउजलनीरतैंअरुनकमलअविरेष
९२ टीका भलोआपनोइष्टताकौउदिमकीएअनिष्टकीप्रापतिहोइ विरहि

नीनैकुरूरैनलगायो ताथके तासकौउदिमकीये करूरउदीपनहैं तासौं अतिषु
तापकीप्रापतिभई पुनः विहारी लोनेमुषडीठिनलगैयोकहिदीनोरईठ हूनीहू
लागतिलगीहियैहितिताहीठि ९३ अथसम अलंकारसमतीनविधिजथाजोग
कौसंग कारनमैजहांपाईयेकारनहीकेअंग ९४ अमविनकारजसिधिजहिउदि
मकरतैहोइ हारवासतियउरकियोअपनेलायकजोइ ९५ टीका हारऔतियउर
दोनोअनुरूपहैं समानहैं ताकोसंबंधवरननहै यथामतिराम दोहा करतलालम
क नुहारहै तूनलषतिउहिओर ऐसेउरजठोरनोउचतैंकरजकठोर ९६ टीका जहांकारज
मैकारनकेसमानगुनपाइये सोइतियसम यथा मूल दोहा नीचसंगअचरजनही
लछमीजलनाआहि जसहीकोउदिमकियोनीकेपायोताहि ९७ टीका कारनजल
ताकोगुनलछमीकारजमे रमासमुद्रतेनिकसीहै औंजसकोउदिमकीयोस्रमविना
जसकोलाभभयो पुनः दोहा मीठीलेबातनमहिलागतिहैअतिलाल वदनसुधाधर
तैंमुरारहैहोतिकत्योंहसिलाल ९८ टीका सुधाधरकोगुनमिठाईवातमैं पुनः दोहा

२५

25

मानैछुटावनकौकियोकुरोमानलषिलाल हिलिमिलिदोउकुंजमैविहरतनवरषाका
ल ९९ अथविचित्र मूल दोहा इंछाफलविपरीतिकीकीजैजतनविचित्र नमतिउचला
लहनकौंजाहैपुरषपवित्र २०० टीका नमिवेसौंउचिताकीचाहि मागाकरतहैधनी
कौधनपावनकेकाज मानलहनकौंतजतिहैं माननहीनहिलाज १ टीका धनीभा
गवानकौनामहै मानवडाईकौंकहतहै अथअधिक मूलदोहा अधिकाईआधारतैं
जवअधेपकीहोइ जौआधारआधेयसौंअधिकअधिकहैसोइ २ कहनेवालाआ
धेयकहिये जामैरहैसोआधार यथादोहा सातदीपनवखंडमैकीरतिनांहिसमा
ति सवदसिंधुकेनीजहोतनवगुनवरनेजाति ३ सातदीपआधारहै कीरतिआधे
यहैं तांकीअधिकाईहै आधारगुनहै सोसवदसिंधुअधेयसौंअधिकहै वडेआधेय
तैंआधारअधिकहोइ पुनः वडेआधारतैंआधेयअधिकहोइजहातहाअधिकाल
कारजानिये नरवारतेंमानवडोमानतेंतरवारवडीइत्यादिकविषैनहीहुइहै दोहा
जामनमैसमहीवसैनहींपियनेहुसमाइ टीका मनआधारसौंनेहआधेयकीअधि

२५

25A

नहि

कार्ई मानियै वैसे विष्णु नांमें सुहृति द्विजकी कुंज सुहाइ ४ टीका हरि आये यतासौं द्विज
आधार वडो पुनः दोहा आवत लषि विपिन हू रितै चढिकै महल उतंग अंगन अंगन समा
तैं आनंद उदधि तरंग ५ टीका अंगन अंगनि विषै आनंद समुद्र के तरंग नहीं समात
हैं अंग वडे आधार नहीं तौ भी भाषा मैं वरनन है अथ अलप अलप अल्प आधेय तें सू
छम होइ आधार अंगुरी की मुंदरी हु तौ भुज मैं करति विहार ६ टीका मुंदरी आधेय ता
तैं आधार भुज मांहि है ताकौ सूछमता किसता भई पुनः दोहा कविहू तैं अति छीन है सषि
त्रिनाल की नार तेरे कुच के वीच मै पावत नहि संचार ७ टीका त्रिनाल सूत आधेय सू
छम है तासौं आधार कुच के वीच ताकी संकीरणता पुनः दोहा आसपास वन गावके

च

अतिही सघन सुदेस ससस्नावक हू नोल है तामैं तनिक प्रवेस ८ टीका वन आधार
ससस्नावक आधेय सो प्रवेस ना करि सकै अथ अन्योन्यालंकारः मूल दोहा जहां परस
पर उपकार है अन्योन्यालंकार ससि सौं निसनी की लगै निसि ही मै ससि सार ९ टीका स
सि सौं निसा नीकी लगै है निसा सौं ससि नीकौ लागत है यातै परसपर उपकार भयो ।

२९

26

कावानसारहै यथामतिराम दोहा ह्वैराषी सषिलाल करि विजउर मै वनमाल नैंरा
ष्यौ निज लाल करि कंठमाल कौ लाल १० टीका लाल नै ललना वनमाला करि राषी
है ललना नै लाल कौ कंठ कौ लाल करि राष्यौ अथ विसेष तीन प्रकार विसेष है अना
धार आधेय वर्नी वसन्त की सिपि कौं कछु आरंभ जो होय ११ वसन्त एक कौ कोकिलै व
रननु तौ रितु अनेक नभ उपरि कंचन लता कुसम भ्रम ह्वै है एक १२ टीका नभ आधार नहीं
नहां कंचन लता वीज्जुरी है कुसम एक चंद्रमा जानिये पुनः मतिराम दोहा चलो लाल वा
कीट साल षो कहीन हिआइ हियो है सुधि राव री हियरो गयो हिराइ १३ टीका एक तौं आ
नाधार आधेय है केरि हू सषी नरहि कौ लछन करत हैं प्रसिधि आधार विनां जहां आ
आधार मै आधेय वरनन होइ जहां प्रसिधि आधार विनु अनते होत सुवास रवि कौ कि
रनै री पद्धिति नम कौ करति विनास १४ पुनः कल पद्धि व्है दैष्यौ सही ताकौं देषत नैन
अंतर वा हरि हिय विहि सिउ ही तीय सुख देति १५ टीका हेरा जैतो हिरै देषि वेकौ आरंभ मैं की
यौ है इष्ट लभ जो कल पद्धि छुता कौ नैन नि सौं देष्यौ और एक नायका कौ अनेक ठौरि

२९

न

ही

वरननकहौ अंतरादिकतेलैकरि पुनः तोहि बिलोकति लषी सची उरवसी वाम सा
धुपास आवत लस्यो सुंदर ननघन स्याम १६ फैली देस विदेस मै तेरी कीरति राम किये ध
वल सब नहनगर स्योंनेकार इस्याम २० टीका एकि कीरतिकों अनेक तेरि वरननकी यो
ग्य घ्याघात मूलदोहा आघात न्नक छुं और तेकी जैकार नंअरु बहुरि विरोधी तै न बै
काजल्याइ यैहोरि २८ टीका और काज करिवेकी वसतुसौं और कारज करियै जैसे तर
वारसौं घासकाटीए बहुरि विरोधी याकौ अरथ यह और छीन रहि जोक्रिया वरनी होइ ।
सो परएकोइ एकारज होवै ताकौ विरोधीहो ई तहां दूसरो आघात करैहै यथा दोहा सु
घणावत जासौं जगत तासौं मारत मार दया करत जो बाल यहि संगलै चलौ भ्रुवार २९ ।
टीका फूल सुं हि विवेकी वसतु तासौं काम मारै है सुमन मारके वान है कोई राजा वैराग्य
नेकौं नवत नंदकरि दिसा और जीतिवेकौं चल्यो है राजा नैक सीस मंचीनिकौं बालककौं
इहां रहिवे दैवो तहां बालककी उकति नहीं संति मेले जानेकौ कारनया बालक पनासो
ई अवअवस्य संग मैलै जानेकौ कारन भयो यथा अलंकारतनौ दोहा पियविछुरत विधि

[illegible]

27

वेहृपति उलटि परे सबु देत जे निरषत स्याम देत है ते निरषत दुष देत २० टीका इहां औरकार
जकरिवेकी वस्तु सौं और कारज करै यथा मतिराम जो पै सषि बिजन गांव मैं छबि रवि रिस
हृग चवाव तौं हरि रूप लषि देत किन नैन चकोरनि चाव २१ टीका इहां भी विरोधी सौं
कारज साध्यौ पुनः दोहा नहिलै भी धन देत है दारद संका मानि दाता धन कौं देत है दा
रद संका जानि २२ टीका इहां उत्तर प्रस्न तर है पहिले अरथ कौ पीछला अरथ विरोधी
भयौ अथ कारनमाला कारन काज परंपरा कारनमाला होत नीति हि धन धन त्याग
पुन ताकौं जस उदोत २३ टीका एक एक कौ कारन होइ एक कारज होइ फेरि दूसरा प्रति
कारज होइ कारन होइ ऐसे जहा रीति दुइ तहा कारनमाला जानिये नीति कारन धन कौं
धन कारन सो धन दान कौ कारन भयौ यथा दोहा नेह बढै नै मिलन सषि मिलै परम
सुष होइ बाढत है पुन विरह तन परिहै नीकैं जोइ २४ पुनलक्षन एक एक काज
नहि है न सु कारन होत कारनमाला कहत हैं ताकौं ज्ञान उदोत २५ नरक होत है पाप तैं
पाप सु दारिद जानि दारद होत अदान तैं दान करन न ठानि २६ नरक कारन पद सैं क

27A

सो पाप कै करन पी है ऐसे जानिये अथ एकावली दोहा अद्भुत मुकत की रीति जहि एका
वलि तहि मानि द्रिग श्रुति लो श्रुति बाहु लो बाहु जंघ लो जानि २७ टीका एक जो है सो उन
र को गहै उन्तर एक कौ न ही गहै याही को गहै तहां द्रिग ने कान को गह्यो कान ने द्रिग
कौं न ही गह्यो कान ने बाहु को गह्यो कहां सजल जह कंज न हि [illegible] कंज न भौंर सु
वास नही भौंर जहि गुंजन नहि गुंजन करै हुलास २८ टीका सो गुंजन नही जो हुलास कों
नहीं करै अथ मालादीपक मूल दोहा दीपक एकावलि मिले मालादीपक नाम का
म धाम तिय हिय कियो तिय हिय कियउ धाम टीका दीपक अलंकार मै बरन्य अव
रन्य को एकु धरम चाहिये इहां एक धरम को आनिवो चाहिये एनना ई लैनी काम नै तिय को
हिय धाम कियो तिय के हिय नै तुहि को अरथ तेरो हिदय धाम कियो कियो यह एक
क्रिया को आनिवो ते दीपक आवति दीपक मिलावति है सो नही धाम धाम हिए हिय उर
वास किया को यो यौ तिलै काम नै तिय को हियमन गह्यो तिय हिय नै तुम मै गह्यो यह एकावली।
जानियै यथा रसिक प्रिया वेतो है वि कानी हा य मेरे हौं तिहारे हाथित म ब्रिजनाथ हा

२८

28

ष्पिकौंनकेविकासनेहो पुनः दोहा कनककेवलिमैकोकनदतामैस्यामसरोज तामैद्वि
उमसवानहैतामैलसैमनोज २० टीका लसैयहएकधरमसोदीपक ग्रहनमालासौं
एकावलीजानिये जहांवरनमानकोग्रहनतहांहूएकावलीसुयाकति अथसार मूल
दोहा एकएकतैंअधिकजहअलंकारहैसार मधुसौंमधुरीहैसुधाकवितामधुरअ
पार यहभलेगुनसौअधिकाई तिनितैंतूलहतूलतेंहलकोजाचकजानि पवनतैंतो न
हिगआनहैमागनउरहियआनि २२ टीका कहूगुनदोषदोउसौंसारहोतहै पुनः
दोहा बडेसुजनगनतासौंसमुदतासौंहैअसमान ताहूसौंआसावडीयहतैनिसवैजानि
२३ अथजथासंख्या दोहामूल जथासंषवरननविषैवसतअनुक्रमसंग करि
अरिमितविपतिकौंगंजनरंजनभंग २४ टीका अरिकौंगंजनकरिमितकौरंज
नकरिविपतिकौभंजनकरि क्रमहीसौंअन्वयजहांतहांजथासंषजानिये पुनः
दोहा सरनपरोविषतूलयहिनरकेमारनहार नहिछाडैनहिभोगवैधनकौंकि
पनगवार २५ टीका सरनपरोजानकैछोरेनही विषतुल्यजानिभोगैनही ५

28A

नैकोंद्रहोभीजयाषंघककह्नहैं अथपरयाय दोहामूल हैपरजाइअनेककोक्रम
सेंआस्रयएक फिरिक्रमतेजवएकहीआस्रयधरेअनेक २९ द्रुमोनरलताच्चरन
मैभईसदलाआर अंबुजनजितिपवदनइतिचंदहिरहीवनाइ ३० टीका नायकाकेदो
उचरनएकुपदारघजातिपलुकतिअनेकजोहैतरलतामंदता तरलतामंदताअनेक
हैंएकचरनआस्रयभई दूसरीपरजायकोवरनन तीयवदनकोइतिएक सोदिनमे
अंबुजमेरही रातिमेंचंद्रमासोवताउकरिरही अंबुजगोचंद्रमाअनेकआस्रयजा
निये इतिपुनः दोहा कवैसेजनतजिअवनिमैलहतिविरहदुषपाइ कवैनुचंदन
पंकमैसोवतिद्रुसमविहाइ ३१ टीका सेजअवनी इत्यादिकनायकाकेअनेकआ
स्रयहैतिकहेहैं प्रथमदोहा मिलनवाहिपियचाहिकेवसीहृदियमेंआइ अब
नमिलैविरहावस्यावसीकामकीलाइ ३२ टीका इहानायकाकोहियएकतामैपि
यमिलनवाहि यादिकअनेककोआस्रयसोकह्योहै अथपरिवृत दोहामूल परि
वृत्तलीजैअधिकमहिपोतोरैकछुदेइ लेनभकतिगोपकनिकोपरनलसिका

से
=

२९

बेष ४१ टीका योमोरे के वहुतलैलेनो नेहानेहा परिछिन जानियै धूपदेनो योशोभ कति
सुकति व्यपिकलै नोतलसौनें नेहा पलटा करनोहाइ तेहा पहथ्यलंकार होनहे प
या अलंकार रतनाकरे दोहा अबकै चितजो करचहे वहुरिनक वहहूं डं यह सखि
कौन सुजानहै चितदै चितालेउ ४० यथा विहारी दोहा सहितसनेह सकोच सुख
स्वेदकंप मुसकानि प्रानपानि करि आपने पान धरे मो पानि ४१ टीका हमारो प्रा
न आप हाथ की यो नायकाने आपनो हाथ हमारे हाथ दियो छिंवा पान धरे पान०
अकारान सवद पूरे वहुवाची है याते नागवेल के पान जानिये अथ परिसंख्या ।
दोहा परिसंख्या इक थल वरजि दूजे थल ठहराइ नेह हानि हिय मै नहीं रही दीप
मै आइ ४२ टीका एक वस्तु को निषेधै दूसरे ठौर ठहिराबे दीप मै नेह हानि ठ
हराई हिरदय मै निषेद कीयो नेह तेल सनेह सो नेह यह सवद सौ निषेध कीयो
है दोहा है भूषन जस मन नहि रतन न करनो सुकित न दोष चक्र वृधि नहिनै चहै भलो
हमान हि रोष ४४ टीका इहां भी सवद ही सो निषेध कीयो दोहा कौनघेप २९

भगवानहेकरनोकहसतसंगि यासंजोगकोविजअवविकोथिरहेहरिअंग ८४ टीका
कौनथानककरिवेसाफकहे भगवंतनैं औरहनहीपदअवरथ्यसोतिकसेहे ऐसेजानीयत
है अथविकलप दोहा मल समवलकोजुविरोधजहिंतहांविकलपसुगावि अप
तिकालनिवाइहैअरिकोसिरकेचाप ८५ टीका अरिकोसिरनिवावनोअहचापनि
वावनो होनोसमवलहेंविरोधहै जोसिरुनिवावेगोतौलराईनहीहोइगी धनुषचढा
वेगोनहीहोइगो जोधनुषचढावेलरिवेकोतोसिरनहीनिवेगो पुनः दोहा मान।
कियासषिवियसोंअनितिहियेरोसवढाइ रषिहेकेहितऔरसोकेवसिहेहेआइ ८६ टीका
औरसोहितराषेतोवसिनहीहोइ जोवसिहोइतोऔरसोंहितनहीरहेऐसेजानियें अ
थसमुचै दोहा दोइसमुच्चैभाववहुकहेएकउपजतसंगि एककाजचाहेंकहोहेअ
नेकरइकअंग ८७ टीका वहुतकोकिताएककोंवहुतभावएकहीसमैएकसमैउपजे।
ताकोजहांरचनाकरेंतहांप्रथमसमुचैहै हैयहअरथ अनेकएककारनकोंकह्योचाहें
एककहेंमैहीपहलेकह्यो दूजेकहेंमैहीपहलेकह्यो तहांदूसरोसमुच्चैजानिये दोहा

30

नव अरि भाजत निरतनि फिरि भाजत हैं सतनार जोवन विद्या धन मदन मद उपजावत
आर ४८ टीका एकही समै मैं अरिकौं भाजिबो इत्यादि क्रिया उपजी यासैं जोवन क
हत है मैं ही मद कौ उपजाऊ विद्या कहत है मैं ही मद कौं उपजाऊं धन मदन दोनों यह
भी ऐसे ही कहत हैं पुनः दोहा अहुन अहुन हि गआई केवो लोक छुन वैन चकी
डरी थी जी हसी रसी छुपाए नैन ४९ टीका आसतें आसतें रसिक नायक ने नायका
के नैन मूंदे तब चकी आदिक क्रिया एक बेर ही उपजी तभई इहां एक विषै बहुत भाव की
रचना उपजी पुनः दोहा विहारी को भिक्री सरकनि पीतपट चरक लटक की चाल च
लि चष चितवनि चोरि चित लियो विहारी लाल ५० पुनः टीका लाल की इतनी क्रिया
नै मेरो चित्त चोरि लियो भिक्रीसरकनि कहै है मैं ही प्यारी को चित्त चुरावौंगी पी
तपट की चटक कहै है मै ही चुरैहों इति आदिक क्रिया यों कहत हैं अथ कारकदीपक ल
लदोहा कारकदीपक एक मैं क्रम तैं क्रिया अनेक जाति चितै आवति हसति वूझ
ति या नविवेक ५१ यथा विहारी औंहति [illegible] सति मुष नटति टैनि कहै न रजाइ वे ३०

२ २

30A

नरसलालचलालाकीमुरलीधरीलुकाइ ५२ टीका मुरलीलुकाइवेकोछलकरि
केवातकरिवोइहसाध्यो यातेहेतुकीपरयायुक्तिभीभासैहै औरएकहीसमामैभाव
उपजतहैत [illegible] समुच्चैजानिये इहांएकसमामैक्रियाकरतामैतहीउप
जी जवमुरलीलालजीमांगैहैतवनायकाइरपावैहै मुखसोनाहीहैयोंकहैहै जव
नायककोंजातोदेषैहैतववासुरीदेहैहैयोंकहैहै पाछेनदेहै यथा विहारीदोहा कह
तनटतरीझतषिझतमिलतषिलतलजियात भरेभौनमैकरतहैं नैननिहीसोंवात
५३ भयोभौनइतिवंधकहैंवातकरिवेकोंतोभीवातकरिवे कोकारजभयो तातेतीस
रीविभावनाभीभासैहै एकमैअनेकक्रियाक्रमतैयातेकारकदीपक हीजानिये
५३ अथसमाधि मूल दोहा सोससमाधिकारजसुगमओरहेतुमिलिहोत उनके
ठानिवेकोंभईअथयोदिनउहोत ५५ टीका नायकानेउपपतिकेपासजाइवेकारज
आरंभ्योसोसंध्याभएसुगमभयो दोहा सषीमनावतिमाननीनहिमानततिवार
वोलिउठेपिकनिकरसुनिछुट्योमानअकुलाइ ५६ अथप्रत्यनीक मूल दुषदैअ

३१

31

तिकेपछिवेंकांमत्सनीकरहिभाइ दिगनिदवाएकंजतें चढेकांनपेंजाइ ५७ टीका व
लवानजोमछतासोंतोजोरुचलैनही तबमछकेपछीकोंरुपहै तोजहांवरननहोइ
तहांमत्सनीकालंकारह्वैहै जैसेदिगनसोंहारेकंज तिनिकेपछीकानजोपतितिनिपै
कमलचढतेभए अथामतिरामदोहा तोमुखछविसोंहातिविधुभयोकलंकसमेत
सरदइंदुअरविंदमुखअरविंदनिदुखदेत ५७ टीका हेअरविंद मुखतेरीमुखछ
वि सोंचलवानसचहै तासोंतोंसरदकेइंदुकोजोरुचलैनही तबमुखछविकेपछिजो
हैंअरविंदतिनकोंदुखदेतहै संकुचितकरतहै अथकाव्यारथापत्ति मूलदोहा का
व्यारथापत्तियहकियौतिनिकोंयहकहाबात मुखजीत्योवाचंदसोंकहाकमलकी
बात ५८ टीका यहकियौतोयहकितनीबातहै याबातकोजहांवरननहोइ मुख
तैंयाचंद्रमाकोंजीत्योजितितिनिकमलनिकोंजीत्योहै तोहिमुखकोंकमलनिको
जीतवोकहाबातहै पुनःदोहा भेदआपनेहृदयकोंनिकरेहैंकुचवाल भेदतओं
रनिकेहियेअचरजकहाविसाल अथकाव्यलिंगमूलदोहा काव्यलिंगजबजुक

३१

31A

३ ताकोसमरथनकियोहमारेहियरैमेसोप्रीवहैजिनतुमजसरायोयो।

निसोंअरथसमरथनहोइ तोकैंमैंजीत्योमदनमोहियमैंसिवसोइ ९० टीका समर
थनीयजोअरथताकोसमरथनपुष्टकरनोसोकाव्यलिंगकहीए मदनकोजीतवोक
ठिनसोसमरथनीयहै पुनःदोहा कहाकामज्वालाहोलनसहततहठिकेआप वाकोव
दनपियपूषमयचहिहरिहैतनताप ९१ टीका हेलालकोकामागनिसहारनेरोहठिकै
वाकोमुखअग्निरूपजोहैसोतनकेतापकोनासैगो उकतिसोंअरथनभयो अथअ
रथांतरन्यास मूलदोहा जोविसेषसामान्यद्रिढतोअरथांतरन्यास रघुवरकेवल
गिरिनतेवडेकरैंनकहास ९२ टीका जहांविसेषअरथसमरथनकोसामान्यअरथरा
खै किंवासामान्यअरथकेसमरथनकोविसेषअरथराखै
तहांअरथांतरन्यासः श्रीरामजीकेवलतेंसमुद्रमें
पहारतिरेहैं यहप्रसन्नतिविसेषअरथहै ताकोपुष्टकरिवेकेलीयें वडेकरैनकहासय
हअप्रसन्नतिसामान्यअरथदियो पुनःदोहा नीचोंसंगगुनीनिकेचढतउचपदजाइ फू
लमालकेसंगितैंसूतहिसीसिचढाइ ९३ टीका गुनीअनिकेसंगिनीचउचीपदवीकोपा

ल

समरथ

वहव्यापकेसा
मान्यऋलयव्या
पकोविसेसः

वैहै यहप्रसिधवानतहै ताकौंविसेषअरथमैपुष्टकीयोहै पुनःयथाविहारी दोहा
पियमनरुचिह्वैवोकठिनतनरुचिहोतसिंगार लाखकरोआंषिनचहैवहैवहाएवा
र ९४ टीका पियकेमनकीरुचिह्वैवोयहप्रसिधिवातहै ताकौंअप्रसत्ततिसवकोऊजा
नैहै यातैसमानवातहै ताकौंपुष्टकीयो पुनःदोहा वेडनहूनैगुननिविनुविरदवडाईए
पाइ कहतधतूरेसौंकनिकगहनोघडयोनजाइ ९५ टीका इहांसामान्यकौविसेषसौंस
मरथनकीयो अथविकस्वर लक्षनदोहा विकस्वरहोतविसेषजवफिरिसामान्यविसेष
हरिगिरिधार्योसतपुरुषभारसहैंज्योंसेष ९६ टीका विसेषअरथकौंसामान्यअरथसौं
पुष्टकीजीये औसमानअरथकौंफेरिविसेषअरथसौंपुष्टकीजिये एकहरिनैगिरिधा
र्यो सोवातवहुतनहीहोइ सोविसेष जोवहुतप्रसिधिसोसमान्यकहीए हरिगिरिधार्यो
यहविसेषसतपुरुषहै सतपुरुषवडेकारजकौंकरतेहैं संसारमैयहसामान्य ताकौंपुष्ट
कीयोविसेषवातसो अवलाईभीसेषनागभारसहारैहै यहविसेषजानिये पुनःदोहा सं
दरिताकीसीमतियवालतिवचनरसवंक गुनमैंआगनदवतिहैंज्योंससिमाहिकलंक ९७

32A

टीका एरवारधदोहाकेवीचविसेषहै उतरारधमैसामान्यऐांपेतिविसेषकह्योहै यथामति
राम दोहा मधुपमोहमोहनतज्यो यहस्यामनिकीरीति करोआपनोकाजलगिनमेजातिसों
प्रीति ६८ पुनः भावीवडीअप्रवलहैतजतिनअपनोअंग रामचंद्धावतभए कनिकह
तिनकेसंगि ६९ भावीकीप्रवलताविसेषऐसेजानिये अथपौंहोकति मूलदोहा पौंहोक
ति उनकरषकोकवैंअहेतुहिहेत जमुनातीरतमालसेतेरेवारऐसेत ७० टीका जोउतकरषको
कारननहीहोइ ताकोंकारनकहिकैवरननकरीएजहांतहांपौंहोकतिहोतिहै इहांजमुनाके
नीरसेउपजियोतमालवृक्षकीस्यामताकोकारननहीहै तमालआपहीस्यामहोतहै ताकोहे
तुठहिरायो यथा अलंकाररतनाकरे दोहा चंदनकुंदकपूरहूंलहतनतोकीहोति कहांसंभवै
लासकेकहांरतनवकुचगौर७१ टीका कैलासरहिवोसंभुकीगोराईकोहेतुनही ताकोहेतुठ
हिरायो यथा मतिराम दोहा गंगानीरविधुहविमलकविनुमसकानिउदोत कनिकभवन
केदीपलौंजगमगाततनजोति ७२ टीका गंगानीरमैविधुप्रतिविंवस्वेततताकोकारननही ता
कोहेतुठहिरायो पुनः कनिकभवनदीपकप्रकासकोकारननही ताकोकारनठहिरायो ।

३३ 33

अथ संभावना मूलदोहा हैयाजौयोहोइतौसंभावनाविचार वकताहोतोसेवजौ
तौलहतोगुनपार १४ टीका अैसीजहातरककरै जौसेवनागवकताहोतोतौगुन
कौपारपावतो यथा विहारी दोहा जौवाकेतनकीदसादेष्याचाहतआप तौवलि
नैकुविलोकियेचलिअचकाचुपचाप अथमिथ्याध्यवसित मिथ्याध्यवसितक
ठहितकहे झूठयहिरीति करमेपारदजोरहेकरैनवोढाप्रीति १५ करैजुमाला
नभकुसमकरैनवारतियप्रीति टीका एकझूठकौसिधिकेलियेदूसरोझूठजहा
कहियेतहांमिथ्याध्यवसितअलंकारजानियै नवोढाकोप्रीतिकरनोअसंभावि
तहै ताकीसिधिकेलियैंदूसरोझूठकह्यो हाथमैजोपारोरहैथिररहैतोनवोढाप्री
तिकरै पुनः मतिराम लघवचननकीमधुरिताचषिसापनि निजसौंन रोमरो
ककपर४ म छ्रलकितनभएकहतवोपनाहिमोन १६ टीका लघवचनमेमधुरितानहीसो
पवैसोनतनहीइसाटिकजानियै अथललिता मूलदोहा ललितकह्योकछुचा
हियेताहीकेप्रतिविव मेतवांधिकरिहैकहाअवतोउतरेअंवु १७ टीका प्रसंन ३३

33A

नकोईहोइ ताकौंकछुवचनकह्योचाहिये तोहिछांडिवाहीगातकोप्रतिबिंबकोईऐसो
हवचनअप्रसन्नतिकहोये तहांललितालंकारजानिये कलहांतरितानायकानायक
केल्याइवेकोंसखीकोपठावैहै तानायकाकोंसखीकहैहै जबनायकमनावनेलोकोंआ
यो तबतैनायककोनिरादरकीयोयो प्रसन्नतनायकासोंयहवाततैंनाकहीकहो ताकी
छायालैकैकहो अप्रसन्नतवातपानीऊतरगएपाछेतूवेधुंवांपिकहाकरैगो यथाम
तिराम मेरीसिखिसीषैनसखिमोसोंऊठैरिसाइ सोयोचाहतिनीदभरिसेजअंगारबि
छाइ ३८ टीका मेरीसीषिनहीसीषैहै तावहूतऊषीहोइगो रातिदिनितोहिकलनहीं
परैगो ताकीछायाअप्रसन्नतइसरीवातकहीयेसोयाइत्यादिकजानिये अथप्रहरष
न मूलदोहा तीनप्रहरषनजतननविनवांछितफलजोहोइ वांछितहूतैंअधिकफ
लसमविनलाहियतिसोइ ३९ सोधनजाकेजतननकोवसनचढैकरसोइ ताकोंचि
तचाहतहूतौआईइतीहोइ ४० टीका जाकेमिलिवेकोंउतकंठाथीसोप्रियाइतीहो
इकैआईहै जतननविनावांछितसिधिजहांतहांप्रहरषनजानिये पुनः विहारी दोहा

करमंदरीकीआरसीप्रतिबिंबतपियपाइ पीठिदियेंनिधरकलषतिइकरकिडीठिल
गाइ ८१ दोहा म्हरीषरीसरदपरदरीविधुआधेमगिहेरि संगिलरोमधुपनलईभा
गनगलीअपेरि ८२ पुनः दीपककोउदिमाकियोनैलगिउदयोभान निधिअंज
नकीआषधीसोधतिलसोनिधान ८३ टीका भानउदयोघोरोप्रकासचाहेथो व
हुतप्रकासभयो मतिरामदोहा चाहतेसतपावनसहसगजपावतयहेचाहि भा
वसिंधपैदानिहेगरागनसराहतताहि ८४ टीका इहांचाहेअर्थकोपावेदसती ।
तहांद्रव्यसतकीप्राप्तिकेउपाइकोसाधति द्रव्यसतकीहीप्राप्तिहोइजहांतहां
प्रहरषनालंकारजानिये यथानिधिअंजनकीआषधीकोषोजतेनिधिहीमिलि ।
पुनः मतिरामदोहा हरिकीसुधिकोसाधिकाचलीइकेलीभोंन दूतनिवीचहीमि
लिगएचरनसकैसुषकोंन ८५ टीका हरिकीकहूंसुधिमिलैतोमेउहांहीजाइ
मिलो तहांसाक्षात्हरिहीसोंमिलेवोभयो अथविषादा मूलदोहा सोविषाद
चितचाहितेंउलटोकछुजोहोइ नीवीपरसतिसुतिपरीचरनायुधधुनिसोइ ८६

34A

टीका सियासौंपियनिसा मैविलासकौंचाहतथो तासमेंकुरकटकीआवाजकानमेंआ
ईविपरी प्रातिकालमें [illegible]भोगकरनोसिध्धितिमेविघनकस्यो है सोधुनिकुकरटकी
तें प्रातभयोजान्यो यहइष्टतेंविरुधकीसिधिभई यथाबिहारी दोहा रतिदैसहौंसैं
रहतिमाननछिकठहिराइ नैनांऔगुनहहियैगुनतेंहाथिपरजाइ ८७ टीका औगु
नकीप्रापतिइष्टथी तासौंविरुधगुनप्रापतिकीसिधिभई जहांचाहितेंविरुधहोइतहांवि
षादालंकारजानियै अथउलास सलदोहा गुनऔगुनजबएकतेंपरेऔरउलास
नृपसंतपावनकरैगंगापरेयहिआस ८८ टीका जहांएककेगुनदोषतेंऔरकौंगुनदोष
होइगये जहांउलासालंकारहोतिहै एककेगुनतेंऔरकौंगुन एककेदोषतेंऔरकौं
औ गुन एककेगुनतेंऔरकौंऔगुन एककेदोषतेंऔरकौंदोष चारभांतिकोलासहै अथ
गुनतेंगुनयथा संतनिकीमहिमागुनतें गंगाविषेपवित्रताजोहैसोगुनवरननकस्यो
अथदोषतेंगुन यथा दोहा लाभबडोजोकुसलतेंसेवकनिजचरजोहि टीका राजाकौ
रनादोषकरिकैसेवककौंबंधनविनाकुसलसोंचरिजानौंयहगुनकरिवरननकस्यो ।

४ की २

३५

35

अथ गुनकरि दोष यथा हैं अभागी धनको वेड़ो सेवत संतनि नाहि ८९ टीका संतनि
की महिमा गुन सोधनकौं संतनिकी असेवा हूं पै दोष वरन्यो अथ दोषतें दोष यथा क
वै कठिन कुचकैं नहि तनक द्रुता चरननि धारि निठुलितैं भाजन समै विधिकौं लव अ
रि नाहि ९० टीका राजाके दुर्वसों अरि की लुगाई भाजति हैं भाजिवेकौं कठोर पायवा नाहि
यै इहां पायनीमैं कोमलता सौं दोष भयो ताको मलताकौ वनावन हारो विधाताकौं दो
ष करि वरन्यो अथ गुनतें गुन दोहा सुधा सुगंधि आवत हरस तन सगन भये नंदलाल दे
खनही मुकुलन भयो चित हमारो बाल ९१ टीका इहां नायककी प्रसन्नतातें नायका
मैं प्रसन्नता गुन भयो अथ दोषतें गुन मतिराम दोहा दही हीन मोहन लियो स
खी सहज वन जोरि वेडभाग मन मैं गनैं जोन कल्यो कहूं और टीका इहां नायक
के दधि हरनाहि चंचलता दोषतें नायकाकौं अपनो परम रखा गुन भयो अथ दोष
तें गुन विहारी दो० कुरि फूलेलकौं आचवन मीठो कहत सराहि रे गंधी मति अंध
तें अतर दिखावत नाहि ९२ टीका इहां लेवेवालेकी मूरषता दोषतें अतरको वेचि

३५

35A

वोगुन पुनः दोहा औरु सबै हरषीं फिरति गावति भरी उछाह तुंहीं बहु बिलषी फिरै क्यों देवर के ब्या
ह ९४ टीका इहां गुनतें नायका मैं बिलष को दोष भयो याको अरथ समासोक होत है प्रकासवि
हारी की टीका जो है तामैं प्रकट है अथ दोष तें दोष दोहा रे चंदन वन कौं न जो डुर है वेगहि नास आ
पसि मैं मिलि कै इहां आगि उठै है बांस ९५ टीका इहां बांस के दोष तें वन कौ दोष भयो अथ अव
गया मूल दोहा होति अवगुन आपु औरु के लगैं न गुन अरु दोस पर ससि पाकर किरन तैं फुलैं न पंकज
कोस ९६ टीका काहू के गुन तें काहू कौं गुन न नहीं होइ औरु काहू के दोष तें काहू कौ दोष नहीं हो
इ इहां चंद्रमा के गुन तें पंकज कौं गुन नहीं भयो पुनः दोहा जो दिन मेरे षत नहीं अपने तेन उलूक
अगुन प्रकास क भान कौ कहा कहा बेचूक ९७ टीका उलूक कौं अपिनौ दोष सो सूरज मैं दोष
नहीं मतिराम दोहा मेरे हिय गांसि दृढ़ अब आवर षत वारि मवाहि उठत न अंकुर नेह कौ तो उर ऊ
षर मांहि ९८ टीका इहां मेघ के गुन तें उर कौं गुन न भयो यथा बिहारी दोहा सीतलता रु सुगं
ध की महिमा घटी न मूर पीन सवारे जो तज्यो सोरा जानि कपूर ९९ टीका दोष सों दोष नहीं भ
यो अथ अनुग्या दोहा अनुग्या जो चहै दोषहि कौं गुन मानि होइ बिपति तामे संपदा हि पच

उतहरिग्राति २०॥ टीका विपतामैहरिकी भावतिसोई गुनमान्यो विपतादोषु ताहिकौ चा
ह्यो पुनः विहारी दोहा जोनजुगतिपियमिलनकी धरनकतिमुषदीनि जोलहियेसतसज्ज
नतौ धरकनरकहूंकीन १ टीका पियकोमिलनोगुनदोषनरककौचाह्यो अथ लेस दोहा
मल गुनकौदोषहूदोषकौगुनजानैलेसहूलेस स्तकपाहिमधुरीवानितैं वधनलह्यो विसस
२ टीका मधुरवचनगुनताकौदोषठहरायो वांधोगयोसुक पुनः दोहा रूषरूषकेफलनको
लेत स्वादमधुछाक विनरविमधुरीवानिकै निधरकेडालनकाक ३ कटुकवचनदोषतामै
गुनमान्यो मतिराम दोहा कतसजनीहै अनमनीअसुवाभरतिससंक वडेभागनंदलाल
सौं झूठहूलगतिकलंक ४ टीका इहांकलंकदोषताकौंगुनमान्यो पुनः दोहा प्रतिविंव
तैतौ विंवमैभूतललभयोकलंक निजनिरमलतादोषयहिमनमैमानिमयंक ५ अथमु
द्रा दोहा सुद्रामसतजनपदविषेभौरेनिकरैनाम तोहिमनावनकौंकहैमानितिदोहास्याम॥
६ टीका इहांप्रसतुतनायकाकेवरननमैं दोहाकोअरथ दोइचारीहाहावकैंहै यौदोहाछं
दकोनामकविकोविदजनावनोजानियै पुनः विहारी दोहा कतिलपरैपतमागरैसानज्ञ

३६

36A

हीतिसिसैन जिहि चंपककंवरनीकि पेरगुलम्मनारसेनैन ७ पुनः दोहा नरहतिपियकीमैहू
नीगोम्या सुहिनसहार नैनसरै साहै रहे केतविसारेजाइ ८ यहदोहादेसवंदहै नरहतिको
हूसेग्रंथ नहीरहतो सरैसाकोग्रंथसरैनामसवैसरीषा ग्यासूवंदै सारीषा पास
वंदगांववंदइनोमैमसुद्रालंकारहीहोतहै वरम्यग्रवरनकोग्रासयहाइ सोसलेषजानि
यै इहांसलेषनहीं अथरतनावली मूलदोहा रतनावलि प्रसतुतग्रंथक्रमतैंग्रोरहूना
म रसिकचतुरसुघलछिपतिसकलगपानकोधाम ९ टीका जहांग्रंथकोप्रसंगरहैतै
हा क्रमसोंग्रोरहूकेनामनिकसैतहारतनावलीजानियै इहांराजाकेप्रसतुतवरननमेंप्रसि
धक्रमहीसोंचतुरसुघनामब्रहमालछमीपतिशिवगपानकोधामशिवजानियै पुनः
दोहा साचक्रवर्तिएरकोरघोभीमसेनकोजोह विजैविजैकोतोहिमैंधर्योविधाताचारि १०
टीका इहांराजाकेवरननमैंक्रमहीतैंन्रपिएरभीमविजयक्रमहीसोंराष्योहै पुनःदोहा र
विनैरेतेजहिकरतसोमसीलकौदेत मंगलमंगलबुधिबुधप्रचतकविहेत ११ अथतदगुन
मूलदोहा ...नततजिगुनग्रापनोग्रोरनिकोगुनलेइ वेसतिमोतीअधरमिलिपदमरागछबि

विरेह १२२० पूरी बेसरि को मोती आपके गुन ये तिन छाडि के अधर को गुन गह्यो लाली नी
पुनः दोहा. हंसति बैठें ऊजरे मैं परै न कुंदन उदोत गाथा भासे सांवरी मोहन को रो होत १३ पु
नविहारी पियके ध्यान गही गही रही हे नारि आप आपही आरसी लखि रीझति रिझवारि
१४ टीका आपनो गुन छाडि पुरुष को गुन लियो अथ सरवरूप दोहा मूल एसव रूप ले सं
ग गुन न तजि फिरि तिन्ह गुन लेत हुँ मेमो गुन ताम्रि है कि ये मिरनिकें हेत १५ पुनः सेससमा
म भो सिव गारे न ससैं उजल होत दीपसिरो यह किये रस नाम लिउ द्योत १६ टीका सेष नारा
खत है सो सिव के गर के मति विव सौं स्याम भयो पै तिस्याम ता छोडि कै जस सौं आपनो उजल रा
न लियो इसरो दीपसिरा याहू भी प्रकास नहीं मिट्यो मतिराम दोहा मुकतहार हरि के हिये
मरकत मनिमय होत पुनि पावत रुचि राधिका मुख मुसकानि उदोत १७ टीका हृदय के र
नेसों स्वेत हार स्याम भयो वहुरो मुसकानि सों उजल भयो याते पुरव रूप प्रगट्यो पुनः दोहा व
दन चंद की चांदिनी देहदी पकी जोति राति विते हु लाल वहि मीनरा तिसी होति १८ अथ अत
द्गुन दोहा मूल अयतद्गुन तैनागहै संगी को जिहिं ठाहि पिय अनुरागी ना भयो वसि रागी

२ वही १ 37 ३८ गुन

मनमाहि १९ टीका मनरंगीनहैमनकोरंगनहीलाग्यो जोरंगीनमैरहैसोरंगीनहोतहै ।
विहारी एरीयहितेरीदईकेहूंमतिक्रितिजाइ नेहभरेहीराषियेतूरूषीयेलषाइ २० अथअनुगुन
मूलदोहा अनुगुनसंगतितैजवैपूरवगुनसरसार मुकतमालहियहासतैअधिकसेतहैजा
इ २१ टीका मुकताआपसेतहीहैं हासकेप्रकासतैसेतअधिकभए यथा मतिरामदोहा ।
विरीअधरअंजननयनमिहदीपगअनुपानि तनकंचनकेआभरनलुसमसुरसछविषानि २२ पु
नः तथाः वानरमदिरामतपुनवीछूकीलहिमार भूतलग्योकैचवपर्यौताकोकहाविचार २३ ।
टीका वानरजातिहिंचंचलतापैमदरादिककोसंसर्गभयो पूरवगुनचंचलाईयातेअधिकभई
अथमीलन मूलदोहा मीलतसोसादृस्यतैभेदुजवैनलषात अरुनवरनतियचरनयेजा
वकलषोनजात २४ टीका इहांचरनकीअरूनताअरुमहावरकीसमताहै यामैभेदुनहीभा
सैहै याहीतेमीलतालंकारजानियै पुनः सारीजरतारीलसैकुसमालतीअंग लाषीपर
तिनहिंमोनिमैजातिसषीकेसंगि २५ विहारी वरनवासमुकुमारतासवविधिरहीसमाइ प
पुरीलगीगुलाबकीगातनजानीजाइ २८ अथसामान्य दोहामूल सामान्यजसादृस्यतेजाति

१८

पैनविसेष नांहि फुरति स्मृतिकमलसुहति यलोचन अनिसेष २० टीका अनिसे
षतियलोचननेश्रो स्मुतिकमल रोतो विषैभेउ नहीफुरैहै यहकौनुहै यहकौनुहै नेहो
है सरकी स्वरतिहिष्टि नहीं आवैतंहांमीलनहोतहै सोसास्वाभ्य सैभिंनभिंनभासैहै पै
भेदकपर मननहींभासै इनदोनोमैं ऐसेजानियै पुनः काचमहलमैं कामिनी प्रतिविं
वतिकेमाहि जानिपरै नहिनाहकोकौनतीयकोह्याहि २१ अथउनमीलता मूल ।
दोहा उनमीलितसादृस्यतै भेद फुरैनवभाति कीरतिआगेतुहिनगिरिछुयापरति
हैजाति २८ टीका दोऊभिंनभिंनजातिहोहिंसोमिलिगएहोहिं तामैंकोईइनरभेद
फुरै सोउनमीलनकहावैहै यथाकीरतिऔहिमालयभिंनभिंनजातिहै दोऊ तोमै
सपरसंसोभेदज्ञानभयो मीलनकेविषयमैउनमीलनजान्योजातहै यथाविहारी
मिलिचंदनवैंदीरहीगोरेमुषनलषाइ ज्योंज्योंमदलालीचढैत्योंत्योंउघरतिजाइ ३०
अथविसेषक मूलदोहा इहैविसेषविसेषपुनफुरैजुसमतामांक तियमुषअरुपं
कजलषैससिदरसनतैंसांझि ३१ टीका समताविषैविसेषताजहांफुरैतहांविसेषा

३८

38

लंकारहोतहै तिथनुषव्यनकमलदोऊसमभासतिहैं सोचंद्रमाकेदरसनतेंसोसिवि
घैजानेपरतिहै यहतियनुषहै यहपंकजहै सो संकेचलभयो सामान्यालंकारकेवि
षयमैंविसेषालंकारजानिये दोहा कागस्यामपिकस्याममधोभेदनजानेजाहि ग्रा
वतिजवैवसंतरितकोकिलकाकलषाहि टीका कागऔकोकिलदोऊ न्यारेदिषिआ
वतिहैं मिलिनहीजानेहैं वसंतसोंभेदजान्योजातहै यहकोकिलहै यहकागहै अथ
गरहोतर मूलदोहा गरहोतनहकहुभावतें उत्तरहीतेहोत उनिवेतसतहमे पथिकउ
तरल्लायकसोत ३२ टीका जहांकहुभाववसों उत्तरदीजियेतहांगरहोतरालंकारहोतहै
एकुकोईपथिकउतरिवेलायकधारसरितजाकोएछ्युतिभयो तासोंकामिनीकोउकहति
हैपथिकउनिवेतसतहकेसमीपधारहै उतरवेलायक तहांजाहि कहांनिरजनस्या
नहैविहारकरैंगो यहगरहउतरदयो याकोअभिप्रायगुसैजानिये मतिरामयथा गवा
लनिदेउवनाइहांमोहिकछूनसदेहु वंसीवरकीछांहिमेंलालनाइलषिलेहु ३३ पुनः
यापहारकेगांवमेंमिलैकहूनहिआन उन्नतदेषियपयोधरनिवसियेइहांसुजान ३४

२८

टीका पयोधर मे उ को नाम है वहुरि उक्को मानिये अथ विचित्र मूल दोहा विच प्रश्न उतर उहू
एक वचन मै सोइ मुगधा तिय की केलि हू विगह कौन मै होइ ३५ टीका गट के कोन मै होइ प्र
ही प्रश्न यही उतर गोह कौन मै होइ मतिराम यथा सरद चंद की चादिनी कोक हिये प्रतिकूल स
रद चंद की चांदिनी को कहिये प्रतिकूल ३५ टीका कोक नाम चकवा को ता को प्रतिकूल है पुनः प्र
फुलित कमल छविन जहे हू प्रसन अनेक को उत्तर एक सु चित्र कौन प्रकासत जगत कौ कौन देत सुख
मित्र टीका इहां मित्र नाम सूर्य कमल को बहुरि मित्र हितू को कहीयत है मतिराम को हरि वाहन
मलिन को है गयन मराल तहां चतुर उतर दियो एक वचन उजराज ३८ टीका उज
राज गरुड को नाम है चंद्रमा को बहुरि उजराज ब्राह्मन को भी कहीयत है इहां अनेक को एक
उतर दीयो है अथ सूक्षम मूल दोहा सूक्षम परिआसे लषै कछु क्रिया कछु भाइ मै देष्यो उनि
सीस मनि के सनिल लई छपाइ ३९ टीका पर के मन की बात नायका समुझि गई तब नायक सो
अभिप्राय सहित चेष्टा करती भई इहां बात मन सो सूरज के असित भये मिले वो हाइ गोअसे जना
यो पुनः इहां वा की यासभा प्रकास तामे दोहा हरि ललचाहे चषनि सों देषी तिय सुष मूल पीत

३९

39A

वेनर जलमैं दियो बंधुजीव को फल ४१ टीका लालजी ने प्रियालाल लचो है ते प्रति सौं रखी ।
ये
प्रानकाल जल मैं गुल दुपहरी के पुहुप जल मैं डारति भई याको यहि अभिप्राय है दुपहरी ।
मैं बन मैं विष मिलैगो जलको जीवन नाम है बंधुजीव को नाम दुपहरी है को समै जहां क्रियावि
रहो
दग्धा नायका तहां गहरू षमाल कौंनि है अथ पिहित मलदोहा पिहित छपी वति वानको
जानि वनावै भाव प्रानहि आप सत्रु पियहू सहा वनितियपाव ४२ टीका इहां दुपहरि दवा
त समुझि के चेष्टा करै तहां पिहितालंकार होत है पुनः दोहा रमी तिया विपरीति सषी ल । रति
षि गई सयानि कुंकम सौं कर कंज मैं हसि केलि ष्यो क्रियानि ४२ टीका नर वार हाथ मैं पु
रुष राषत है ते पुरुष को काम कियो है ऐसे जनायो सषी ने नायका को अथ व्याज योक
ति मलदोहा व्याज्योकति कछु और विधि कहै दुरैं आकार सषि सुक कीनें करम एल षिदा
रयौं मनि हार ४३ टीका इहां सषी ने नायका के नष छतनको छपायो सुक कौ क्रियागहि राइ
कै छेका पत्र ति मैं वचन छपावनो होत है इहां आकार को छपावनो भयो ताते व्याज्योक
ति जानियै यथा विहारी दोहा कानैं वरनै उरावनैं कति आवत इहि गेहि कै वाल षी सषी ल

४.

40

बैंलगतिपरहरीदेहि ४४ टीका औरहीतरहिंकहिकेंकछसालकरुगायोनायकानेसषी
तें छुतसभाप्रकासे यथा कोरिकदैनहिलोरिदोहोंगुलाबकेफूल कोदेलगैंसरीरमें
फंरैसोनेयाउझूल ४५ टीका गुलाबकेफूलनालोरोगीकोदेलगतिहैं इझूलफारयोयो
नायर्ककहिकरिआकारदुरायो जहांगुपतनायकादेतहांयहअलंकारहै अथयुक्ति

ठौ

ति दोहा गहोकतिमिसिअौरकेकीजेपरिउपदेस कोलसषीमैजाऊंगीएजनदेवमदे
स ४६ टीका जोवचनऔरसौंकहिवेकोदोइसोऔरसेकहै सभाप्रकासे उतेहेनिहरिके
हतहतिसषिजमुनाकेतीर लैनिजातदोहारकोभलोआनतनीर ४७ वाकविदगधाबै
यहअलंकारहोतहै अथविवृतोकति मूलदोहा मलेषहूआयरगारविये विवृतोक
तिहैजैन विषभाजापतिषतसोंकहतवलायेसेन ४८ टीका विषनाममेंवेलकोहै विष
नाममारवेकोजानिये षेतनाममेंषेतकोऔरइस्रीकोभीकहतिहै मूलषसोवातहूपीहै
कविने प्रगटकिया सैनवतोकेकहतिहै अथसभाप्रकासे सवईया कंजनसैनतहा
सकुंमारगहैरहिये नतनहीसोंसकारे पीतिजिठानीभलेनिवहोथलिरातिमेंभोनरहै

४.

वृत्तिअनुप्रास मूलदोहा वृत्ति एक वहु वरन की वहु विधि समता मानि वानति से
हैं नैन तव आनन नीरज जानि ४९ टीका एक वरन की किंवा वहुत वरन की वहुत
वार समता जहां होइ इहां नैं एक नकार की वहुत वेरि समता आई पुनः ललचो
हैं चष सोल ललन चाहत चपला नारि मदन सदन दरसत सुमन हरषति लषैं निहा
रि ५० टीका इहां अनेक वरनां की अनेक वार समता भई है यातें वृत्तिअनुप्रास जा
निये अथ छेकानुप्रास मूल दोहा कहै अनत अनुप्रास है सो छेकानुप्रास वा
नि नैननि नीका मिनी विलसत प्रिय के पास ५१ टीका सव छेद के अंत में अनुप्रास हो न
त है स्वर अनुस्वार अक्षर जैसे के तैसे रहै इहां प्रास अप्रास को प्रास है जैसें षंजन
में मैन अंजन नैंन रंजन रसादिक जानिये अथ श्रुति अनुप्रास मूल दोहा ५२ अनु
प्रास श्रुति वरन जहं एक वरग के होइ पति मन भावत है चपल चंचल नीन कुटि जोर
५३ टीका इहां पकार मकार भकार वकार एक वरग के हैं ऐसें और जानिये अथ
लाटानुप्रास मूल दोहा अरथ सहत जहं पद फिरै भाव भेद जहं होइ सो लाटानु

भासहै भाषतनकविवरकोर ८४ यथा सेवतनीरसकेकाकहा है तुलसीकीमाल से
वतनीरसकेकाकहानहितुलसीकीमाल ८५ टीका हैतेनहीकहे यह भाव भेदजानि
पै समलेषकरि दोहा सुमनसवहावतजगतमैमोतुलमाहिसुहत सुमनसवहा
वतजगतमैमोतुलमाहिसुहत ८६ टीका वहावनकोअरथउठावतभीहै अ
थपदकोलागततुभास मूलदोहा केचनकरनीनीयकोसुघहेसुधानिवास सुधा
निवाससुहैकहानहाकलकप्रकास अथअसमसकमूलदोहा असमकरनउहीरहै
अरथक्रमेदाहिजार जलदजलदआयोसषीहंसहंसनलचारु ८७ टीका हंसनाम
सुरजकोपछीकोहंसनामप्रगटहै वरषामैहंसनलावतिमैनहीवरनतहैकविप
हपरसिपदहै पुनःदोहा भजनकह्योतातेभज्योभज्योनएकौवार दूरिभजनजा
तेकह्योसोतैभज्योगवार ८८ टीका भजनतामुसिमरनका पुनः भजननाम
सेहोइनेका भज्योकहानसो पुनः भज्योसेव्योयहजमककनातिहै अथपुनरु
कतिवदाभास मूलदोहा भासेजदपुनरुक्तिसोसपुनरुक्तिवदभास भूपति

व

वामनकौंहनैतियकौंदेखनञास ४९ टीका वामनकौंतियकौंडुनतकलिअरा
यभासैहै वामनकोअरथः उहतिकौंहनैहैऐसेजानियै पुनः दोहा नारिन्कौं
छांडतनृपतिकामिनिकोंमुखदेत महासोम्यधारैरहैकरैबुधतिसोहेत ५०
टीका नारिकामिनीकोनाम पुनहकुतिसोभासैहै नाअरिनकौंछांडतहैऐसे
जानियै सोम्यबुधकोनामहै इहांभीसोम्यभलोसभावजानियै अथप्रहेलि-
का महाक्रूरसोप्रहेलिकाजानियै मूलदोहा नीमचरनमहिचलतनहिंसोत
नेनकछीस चारिभुजानृपमानकोनोमुखदेखनअसीस ५१ टीका याकोअर
थसरजमानिवो पुन चारिचरनभुज तनिकहैकरपलवनहिंसीस हैमुख
माकैदेषियनताकोबाहनईस ५२ याकोअरथकछुकीजानिवो अंतरलापिका
वहिरलापिका इतिकेमतमैंचित्रालंकारहै अथसंसृष्टिअलंकारः मूलदोहा ।
संसृष्टिसभुषनजहाहैतिरपेक्षवषानु ससिमुषतेरेदृगकमलपलवहैम
नुपानि ५३ टीका इहांउपमारूपकउतप्रेक्षाअरथालंकारकी संसृष्टिहै तिल

नदुलकीभांतिनुराजदादीसतहै विहारी नरतनस्तरततैसेउरतनसुरततेनन्हति
नीहिडीडीदैनगनरावरेकहतनकौडीडीठि ५४ टीका इहांचितिमनमासेलाको
कृतिकोसोतिहिहै विहारी लगेपासुमनदूहैसफलयानपरोसनिवारि बारीबा
रीआपनीसीचिरनरहनावारि ५५ टीका समतुसेपदसलेषआनपसोरोस
उपमावारीवारीजमक याकोअरथहरिप्रकासटीकामेसपष्टहै सवदालंकार
अरथालंकारकीसंसिष्टिहै अथतीननरहिकोसंकरालंकारः मूलदोहा उपका
रकहैएककोजहसंदेहलषाइ इकपदमैभूषनवहूतचैसंकरकहिजाइ ५६ टी
का एकअलंकारजहांएकअलंकारकोउपकारकहोवे वहुरोजहांसंदेहलगे य
हअलंकारहैकिवायहअलंकारहै पुनहजहांएकपदमैहतीनअलंकारहोहि
तहांसंकरहै यहतीनितरहिकोसंकरहोतहै अथएकअलंकारएकअलंकारको
उपकारककवरनन मूलदोहा भीलुनिनवन्यतिवधुतिकेलीनेभूषनआनि हार
लालहचित्र्यधरहुतिनतेमृगनाजानि ५७ टीका इहांनदगुनमेसाभ्रांतिमानअ

गामापवनमारकोकविनुपीरध्यानमैंनेकरतारलषैनिरषैमिवजाहिउपासनमैंकि
नपकछुमानकरैकवहीनिजदासपरैजहिवासनमै चित्तचाहिछुरैहियकोतमचोर
हरैनषचंदउजासनमै तुलसीहरिपाइपयोजमैसोहतिमोकमलाकमलासन
मै २९ दोह संवतअठारहसौविंतेतापरिचौतिसजात टीकाकीनीपोषदितिगु
रहसमीप्रवदान ३० इतिश्रीहरिचरणदासकृतभाषाभूषनटीकाचमत्का
रचंद्रिकासंपूर्णं शुभमस्तुसर्वजगताम् शुभ शुभ शुभ शुभ शुभ शुभ

५० ॥भाषासूखन॥ दिन २

(16)

296